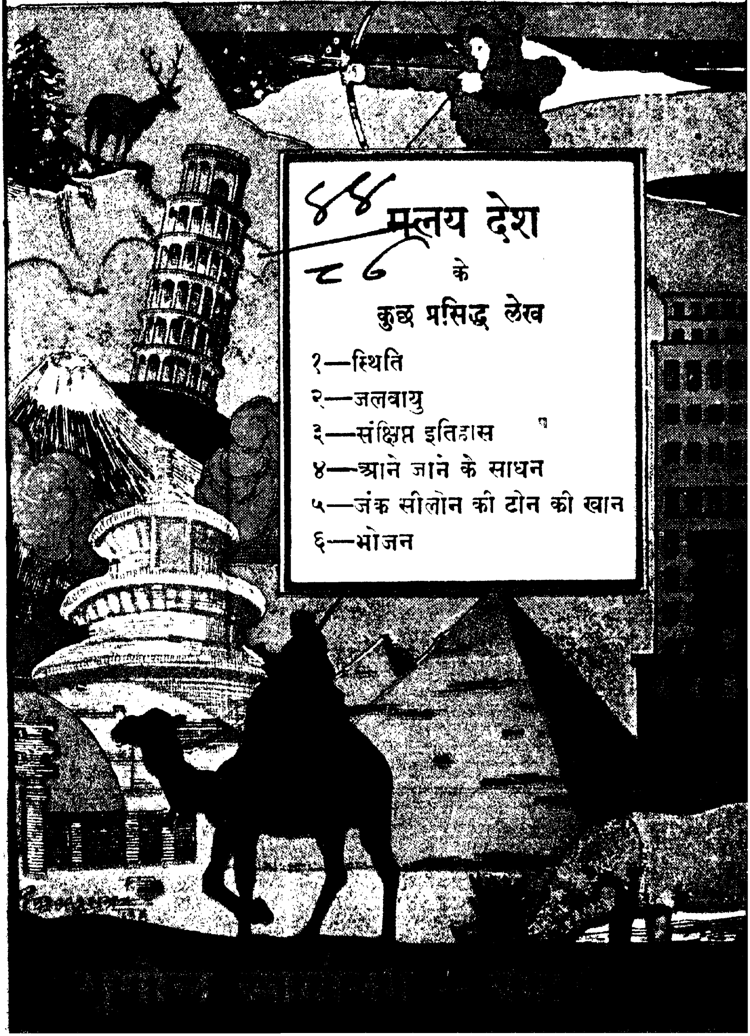
देश दर्शन

मलय देश



मलय देश
के
कुछ प्रसिद्ध लेख

नवम्बर १९४१] # देश-दर्शन [मार्गशीर्ष १९९८

(पुस्तकाकार सचित्र मासिक)

वर्ष ३] ## मलय देश [संख्या ५

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

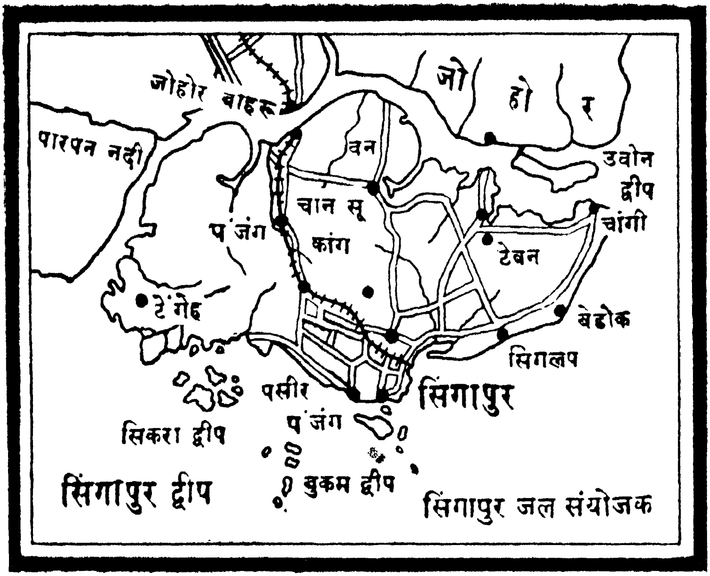
प्रकाशक

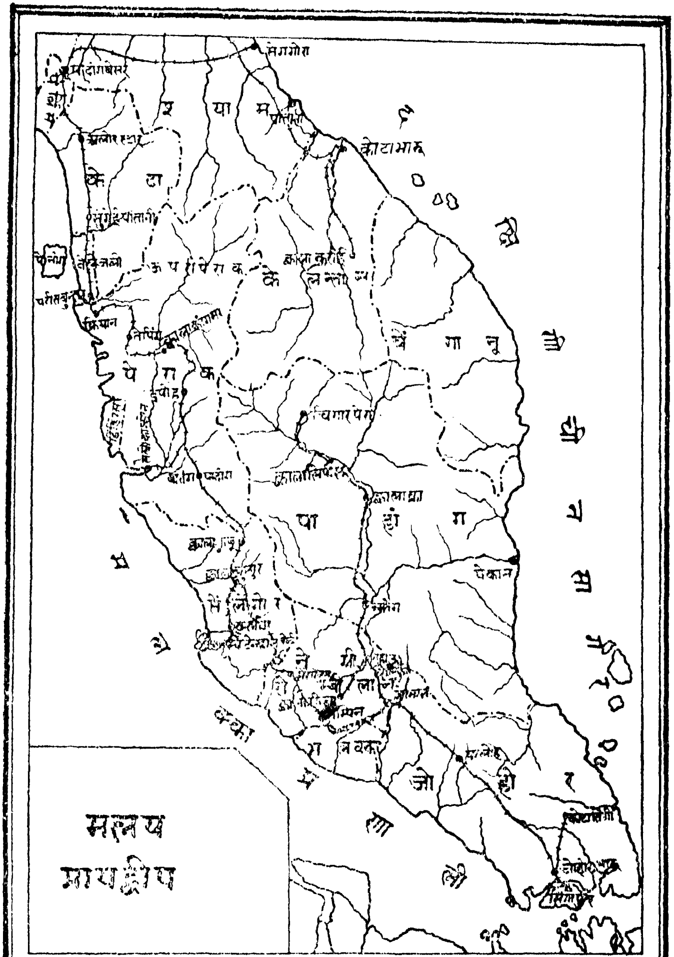
भूगोल कार्यालय, इलाहाबाद

Annual Subs. Rs. 4/-
Foreign Rs. 6/-
This copy As. -/6/-

वार्षिक मूल्य ४)
विदेश में ६)
इस प्रति का ।=)

विषय-सूची


जोहोर बाहरू
पारपन नदी
जो हो र
वन
उवोन द्वीप
चान सू कांग
प पंजंग
चांगी
टेबन
टेंगेह
बेडोक
सिगलप
पसीर पंजंग
सिंगापुर
सिकरा द्वीप
बुकम द्वीप
सिंगापुर द्वीप
सिंगापुर जल संयोजक


मलय
प्रायद्वीप
सिंगोरा
कोटाभारू
पेकान

स्थिति

ब्रिटिश मलय प्रायद्वीप स्टेट सेटेलमेंट, संघ-शासन वाले (फेडरेटेड स्टेट्स) और बिना संघ वाले राज्यों से मिलकर बना है। यह सभी छोटे राज्य ब्रिटिश शासन में हैं। स्टेट्स सेटेलमेंट में सिंगापुर, पेनांग, वेलेज़ली और डिनडिङ्गस प्रान्त, फेडेरेटेड राज्यों में बेराक, सेलाङ्गोर, नेग्री सेम्बिलान और पहङ्ग राज्य और नान फेडेरेटेड राज्यों में जोहोर, केद्दा, पेरलिस, केलांतन और ट्रेङ्गान् राज्य सम्मिलित हैं। यह सभी राज्य एक दूसरे से अलग हैं परन्तु सभी ब्रिटिश सरकार के आधीन हैं।

मलय प्रायद्वीप के उत्तर में श्याम, पूर्व में चीन सागर और दक्षिण तथा पश्चिम में मलक्का जल-संयोजक है। यह प्रायद्वीप एक अंश उत्तरी अक्षांश से १० उत्तरी अक्षांश तक फैला हुआ है। इसकी समस्त लम्बाई केदाह से सिंगापुर तक ५०० मील और चौड़ाई डिंडिङ्गस से ट्रेङ्गान तक २०० मील है। क्रा स्थल-संयोजक के समीप उत्तर की ओर मलय प्रायद्वीप की चौड़ाई केवल ४० मील है। ब्रिटिश आधीन धरती का क्षेत्रफल ५१००० वर्ग मील है।

सूचना

मलय प्रायद्वीप में रीढ़ की हड्डी की भांति पर्वत उत्तर से दक्षिण तक फैले हुये हैं। इस पहाड़ी (रीढ़) के पूर्व की ओर केलांतन, पेनांग, और पश्चिम की ओर पेरक सेलङ्गोर और नेग्री सेम्बिलन है। पेराक की सीमा के समीप पर्वत की ऊँचाई सब से अधिक है। पहंग को उत्तरी सीमा पर गुनोंग थान की चोटी सब से ऊँची है। पेराक और केदाह प्रान्तों में इन पर्वतों की श्रेणियां अधिक हैं और सेलङ्गोर नेग्री सेम्बिलान प्रान्तों के अर्धभाग तक इनकी श्रेणियां जाती हैं। पहंग का उत्तरी भाग भी पर्वतीय है। मलक्का और जोहोर में पहाड़ी श्रेणियां कम और नीची हैं।

मलय प्रायद्वीप में मूदा, पारी, क्रिअन, ब्रवास, सुंगी, लूमत गजमती, लिंगी, मलक्का, प्रीक, सुङ्गीबिदोर, बरनाम, सुङ्गी-तिंगी क्लांग नदी, सुंगी बुलोह, मुआर, सुंगी ट्राएंग, पहांग, एंडायु, सेम्ब्रोंग, मर्सिंग आदि मुख्य नदियां हैं। नदियों से नावों द्वारा सामान ढोया जाता है। नदियों के कारण मलय देश की भूमि अधिक उपजाऊ बन गई है।

मलय प्रदेश का तट बराबर तथा चपटा है। पूर्वी



तट इतना सख्त तथा बराबर है कि उससे सड़क का काम लिया जा सकता है। गहराई कम होने के कारण नदियों में स्टीमर तट से कुछ ही मील भीतर की ओर जा सकते हैं। नदियों के मुहाने पर मिट्टी के ढेर लग जाते हैं जिससे छोटे से छोटे स्टीमर या जहाज के लिये भीतर प्रवेश करना कठिन हो जाता है।

सिंगापुर और पेर्नांग बन्दरगाहों के सिवा मलय प्रायद्वीप में केवल एक स्वेटनहम नामक बड़ा बन्दरगाह है। लुमुत का प्राकृतिक बन्दरगाह डिंडिंगस प्रान्त में है परन्तु यह बन्दरगाह रेलों द्वारा भीतरी भाग से मिला नहीं है। पेर्नांग के दूसरी ओर प्रै नामक बन्दरगाह बनाया गया है। वहां तक रेलवे लाइन जाती है। इनके सिवा बहुत से छोटे छोटे बन्दरगाह हैं जहां पर छोटे स्टीमर ठहरा करते हैं। पश्चिमी तट पर मलक्का डिक्सन तेलोक एँसन, लुमुत और वेल्ड नामक बन्दरगाह है। पूर्वी तट पर पहंग क्वांटन, ट्रेंगनू और केलांटन नदियों के मुहाने पर बन्दरगाह बने हुये हैं।

पूर्वी तट पर वर्ष में आठ महीने तक समुद्र की दशा शान्त रहती है और सामान जहाजों से उतारने में किसी

प्रकार की कठिनाई नहीं होती है परन्तु उत्तरी-पूर्वी मानसूनी महीनों (नवम्बर से अप्रैल तक) में सामान लादने तथा उतारने में बड़ी कठिनाई उठानी पड़ती है।

बन्दरगाहों तथा नदियों के मुहाने पर सरकार की ओर से प्रकाश-घर बनाये गये हैं जिस से जहाजों के चलाने में किसी प्रकार की भी कठिनाई न उठानी पड़े।

मलय प्रायद्वीपों में *बुकित तिमाह, मंदाई, पश्चिमी पहाड़ियाँ हैं और गवर्नमेंट पहाड़ी, बुकित मरताजन, बुकित पश्चोर, जीसुंटिंगबलोह, बुकित सेगारी, बुकित पङ्कोर, बुकित मलक्का, बुकित बेम्बान, बुकित सेदेतान, बुकित बाततीगा, गुनोंग इनास गुनोंग बाबू, गुनोंग केबायु गुनोंगयांग बाप, गुनोंग तुमांगाह, गुनोंग योंग ब्लार, उलू-लियांग, गुनोंग नुअंग, बैसर हंतू, गुनोंग तहान (सब से ऊँची) योंगयाप आदि मुख्य पहाड़ी चोटियां हैं। इन के सिवा और भी सैकड़ों चोटियां हैं जिनकी ऊंचाई १०० से ५००० फुट तक है।

प्रायः समस्त प्रायद्वीप में सघन बन है। वर्षा के कारण पौधे १० दिन में २० इंच बढ़ जाया करते हैं।

---

*मलय भाषा में पहाड़ी को बुकित और पर्वत को गुनोंग कहते हैं।

जलवायु

मलय प्रायद्वीप की जलवायु गर्म है। सिंगापुर विश्वत रेखा से केवल ७६ मील उत्तर की ओर स्थित है। समुद्र की अधिकता तथा बादलों के कारण गर्मी कम हो जाती है और मलय प्रायद्वीप उत्तरी भारत से कम गरम रहता है। सिंगापुर में औसत ताप ८२° रहता है। स्थानीय भौगोलिक कारणों से पेनाङ्ग की जलवायु सिंगापुर से अधिक गरम रहती है। स्थानीय भौगोलिक स्थिति के कारण ही क्वाला लिपिस का ताप पेनांग से ऊँचा रहता है।

मलय प्रायद्वीप की गरमी नमी के कारण अधिक दुखदाई प्रतीत होती है साथ ही साथ साल भर बराबर गरमी रहती है।

सिंगापुर में सालभर में औसत से ७२ इञ्च पानी बरसता है। पेनांग में ७२ इञ्च से कम और दूसरे प्रान्तों में ७२ इंच से अधिक पानी बरसता है। १६२४ ई० में टैपिंग पहाड़ी पर "काटेज" में २७२ इञ्च वर्षा हुई थी।

मलय प्रायद्वीप की ऋतुएँ भारतवर्ष की भांति भिन्न नहीं हैं। नवम्बर से अप्रैल तक उत्तरी-पूर्वी मानसूनी

हवायें चलती हैं और मई से लेकर अक्तूबर मास तक दक्षिणी मानसूनों से मलय प्रायद्वीप में वर्षा होती है। मलय प्रायद्वीप कम चौड़ा भी है इसी कारण वहां प्रायः समानरूप से गरमी और नमी की एक लम्बी ऋतु रहती है। भारतवर्ष की भांति वहां हम गर्मी को वर्षा से या वर्षा को शरद ऋतु से अलग नहीं कर सकते हैं।





बनस्पति और पशु

मलय प्रायद्वीप में बनस्पति बहुत पाई जाती है और वह साल भर हरा भरा रहता है। गरम और नम जलवायु के कारण वहां अगणित भांति के पौदे उगते हैं। समस्त देश में बड़े बड़े घने बन फैले हुये हैं केवल खेती वाली भूमि बनों से खाली है। मलय में १५० भांति के नारियल के बृक्ष तथा ७६० भांति के उपवन वाले बृक्ष पाये जाते हैं।

नारियल, आम, केला, सुपारी, बादाम, अखरोट और मसाले आदि के बृक्ष पाये जाते हैं। अब समस्त प्रदेश में रबड़ की खेती होती है।

बनों में साल, सागौन, चन्दन, जंगली पौदे, चीड़, देवदार आदि के बृक्ष पाये जाते हैं। तम्बाकू, चाय और क़हवा की खेती होती है।

मलय के बनों में भांति भांति के पशु-पक्षी पाये जाते हैं। मलय के पक्षी, तितिलियां, घोंघे, प्रवाल आदि बड़े सुन्दर होते हैं। हाथी, शेर, चीता, तेंदुआ, बारहसिंघा, हिरन, गैंडा, भालू, भेड़िया, स्यार आदि पशु मलय के

बनों में पाए जाते हैं। बनों में साँड़ तथा जंगली भैंसे भी होते हैं जो बहुधा बड़े ख़तरनाक हो जाते हैं।

मनुष्य के रूप के बन्दर भी मलय प्रदेश में बहुत हैं इन्हें बन-मानुष कहते हैं। इनकी चार ख़ास क़िस्में होती हैं। सबसे बड़ा सियामेंग (बन-मानुष) होता है। इनके सिवा कई तरह के बन्दर पाये जाते हैं। चमगादड़ भी बनों में कई प्रकार के होते हैं जिनमें सब से बड़ा फ्लाइंग फाक्स (उड़ने वाली लोमड़ी) के नाम से प्रसिद्ध है। बन-मानुषों में एक अजीब बन मानुष होता है जिसके दांत नहीं होते हैं। यह चींटी खाता है और इसे स्कैली कहते हैं। समुद्र में भारतीय ह्वेल मछली पाई जाती है। समुद्र में और दूसरे प्रकार की छोटी छोटी मछलियां बहुत पाई जाती हैं। शार्क, डेविल और आक्सरे आदि दूसरो बड़ी मछलियाँ समुद्रों में मिलती हैं। बनों, समुद्रों और दलदलों के मध्य निवास करने वाले लगभग ६०० प्रकार के पक्षी मलय प्रायद्वीप में पाये जाते हैं।

रेंगने वाले जानवरों में कछुए, सांप, घड़ियाल, छिपकली आदि हैं। हरा कछुआ भोजन के काम आता है। नदियों की स्चुअरी में घड़ियाल बहुत पाये जाते



हैं। दलदलों और कम गहरे पानी वाले स्थानों में यह बहुत रहते हैं। इनके सिवा बनों में भांति भांति की बड़ी बड़ी छिपकलियाँ पाई जाती हैं।

मलय प्रायद्वीप के बनों में सांपों की बड़ी अधिकता है। कुल मिला कर लगभग १०० प्रकार के भिन्न भिन्न सांप पाये जाते हैं। इनमें से बहुतेरे बड़े विषैले होते हैं जिनके काटने से मनुष्य जीवित नहीं रहता है।

मलय प्रान्त में कीड़े मकोड़ों की बहुत अधिकता है। प्रत्येक भांति की शहद की मक्खियाँ, चींटियां, चींटे, बर्रैं, मटे, मकड़ियां, बिच्छू आदि पाये जाते हैं।

समुद्र में सीप, प्रवाल, स्पञ्ज आदि बहुत पाये जाते हैं।

संक्षिप्त इतिहास

मलय प्रायद्वीप के आदि निवासी नेग्रिटो (हबशी) लोग हैं जो बनों में रहते हैं। यहां का इतिहास अधिक पुराना नहीं है। सत्रहवीं सदी में रेम्बौ पर सर्व प्रथम विदेशी अधिकार हुआ। उस समय प्रायद्वीप पर सुमात्रा का अधिकार था। रेम्बौ के बाद नेग्रो सेम्बिलान का इलाका प्राप्त हुआ।

नेग्रिटो जाति के पूर्व मलय प्रायद्वीप में पूर्व ऐतिहासिक काल के निवासी रहते थे जिनके चिन्ह समस्त संसार में पाये जाते हैं। उनके पत्थर के औजार टैपिंग के कौतुकालय में देखने में आ सकते हैं। मलय लोग अब भी प्राचीन ढंग की कुल्हाड़ियों का प्रयोग करते हैं। जावा मलय प्रायद्वीप के समीप ही है वहां पर बन-मानुष की एक खोपड़ी मिली थी। सम्भव है कि यह बन-निवासी पत्थर की कुल्हाड़ियों का प्रयोग करते रहे हों। प्रायद्वीप के कौतुकालयों में अजीब ऐतिहासिक तथा संस्कृत की वस्तुओं का अवलोकन होता है। कौतुकालयों में हम देखते हैं कि गरीब नेग्रिटो कृषि का काम न जानने के कारण इधर उधर घूमा करते थे। इस प्रकार कौतुकालयों में वहां के निवासियों के जीवन का दृश्य दिखाया गया है।

सकै और सेमंग लोग प्रायद्वीप के जीवित स्मारक हैं। केदाह वेलेजली प्रान्त और सिंगापुर आदि स्थानों में प्राचीन काल के शिला लेख पाये जाते हैं। केदाह में गुफा के भीतर लेख हैं जिससे पता चलता है कि वहाँ पर कोई योगी रहता था। वेलेजली प्रान्त के उत्तरी भाग में एक मन्दिर के स्तम्भ पर शिला लेख है। यह लेख ईसा से ४०० वर्ष पहले का है। चेरोह टोकुन की शिल्प-कला ६०० वर्ष ईसा के पूर्व की है। सिंगापुर के समीप मुलायु करीमुन का लेख ४०० वर्ष ईसा से पूर्व का है।

लिंगी नदी के तट पर पंगकालन केम्पस के समीप कुछ स्मारकों के खण्डहर हैं। मुसलमान राजाओं के समय के प्राचीन लेख अरबी भाषा में हैं।

इन शिला लेखों के सिवा मलय जाति के अलावा दूसरी जातियों की प्राचीन सभ्यता के चिन्ह भी पाये जाते हैं। यह पीतल, टीन, लोहे और ताँबे के बने हुये सामान हैं। सेलिंसिंग की प्राचीन खान के चिन्हों से पता चलता है कि उसके खोदने वाले कोई विदेशी थे क्योंकि खान अधूरी खोदाई करके छोड़ दी गई है। शायद यह खान खोदने वाले स्यामी लोग थे।

देश दर्शन

मलय प्रायद्वीप के प्राचीन चिन्हों से पता चलता है कि दक्षिणी मलय में बहुधा सभ्य लोग आये परन्तु उन्होंने कभी भी उसे अपना घर नहीं बनाया। १४०० ई० में मलय जाति वाले प्रायद्वीप में आये। उत्तरी केदाह केलाण्टन, ट्रांग और सिङ्गोरा में प्राचीन समय में शक्तिशाली बौद्ध राज्य था। केदाह में अलंग-काहसक एक बड़ा प्रतापी राजा हुआ है उसका काल इतिहास में स्वर्ण काल के नाम से प्रसिद्ध है। लंगकासूक राज्य का वर्णन चीनी पुस्तकों में (५०० ईसा से पूर्व) आया है।

सातवीं सदी में पलेम बंग बौद्ध राज्य (दक्षिणी सुमात्रा) ने तनाह मलायु देश को विजय किया। तनय मलायु उस प्रदेश का नाम है जिसमें सुमात्रा की सियाक और कम्पर नदियाँ बहती हैं। दो वर्ष के बाद पलेमबंग के राजाओं ने पलेमबंग और केदाह के राजा की उपाधि ग्रहण की। चायुजुक्वा नामक चीनी यात्री ने १२५० ई० में लिखा है कि केदाह, ट्रेगानू, केलान्तन और लंका आदि देश पलेमबंग के अधिकार में थे। २०० वर्ष के बाद लीगोर (आधुनिक स्यामी) लोगों ने उत्तरी मलय



की विजय की जिससे पलेमबंग का शासन १३७७ ई० तक चलता रहा। १३७७ ई० में सिंगापुर पर जावा के महापहित हिन्दू राज्य का अधिकार हुआ।

कुछ वर्षों के बाद मलय प्रायद्वीप और पूर्वी द्वीप समूह के अधिकांश द्वीपों पर महापहित का अधिकार जम गया। १४७७ ई० के बाद जब जावा के मुसलमानी राज्य का उत्थान हुआ तो हिन्दू राज्य का अंत हो गया।

सिंगापुर के जो हिन्दू निवासी भागे उन्होंने मलक्का में अपना अधिकार जमाया और १५११ ई० में वह एक बड़ा बन्दरगाह हो गया था। १५११ ई० में पुर्तगाली गवर्नर अल्बुकर्क ने उसे अपने अधिकार में किया। पुर्तगालियों ने पहाड़ी, नदी-तट और नगर के द्वारों पर किले बनाये। मलक्का सिंगापुर और पेनाङ्ग के बराबर उन्नति नहीं कर सका। इसका मुख्य कारण यह था कि वहां पर कोई प्राकृतिक बन्दरगाह नहीं है। बड़े बड़े जहाजों को ठहरने के लिये वहां पर समुद्र भी अधिक गहरा नहीं है फिर भी वह एक आवश्यक बन्दरगाह है।

देश दर्शन

आदि काल में ईस्टइंडिया कम्पनी ने सुमात्रा के तट पर अपनी बस्तियां बसाईं। इन बस्तियों का केन्द्र बेनकूलेन में था। १५८० ई० में ड्रेक मलक्का पहुंचा। उसके बाद लंकास्टर अपने तीन जहाजों को लेकर पेनांग द्वीप में गया और दो महीने तक वास किया।

कैप्टन फ्रांसीसी लाइट प्रथम अँग्रेज़ था जिसने मलक्का में अपना स्वार्थी घर बनाया। १५ वर्ष तक उसने वहां अँगेज़ों की नींव जमाने का प्रयत्न किया। १७८६ ई० में केदाई के बादशाह ने उसे पेनांग का द्वीप दे दिया। फ्राँसीसी लाइट ने वहाँ पर ब्रिटिश झंडा लगाया और उसका नाम वेल्स के राजकुमार द्वीप रक्खा।

इसी बीच जावा और सुमात्रा में डच लोगों ने अपनी नींव भली भाँति स्थापित कर ली थी। १६४१ ई० में उन्होंने मलक्का से पुर्तगालियों को मार भगाया। उसके बाद मलय के व्यापार के लिये डच तथा अँगेजों में तनातनी चलती रही।

१७९५ ई० में अँगेजों ने मलक्का द्वीप डच लोगों से छीन लिया। उस समय मलक्का की आबादी २०

हजार थी। कुछ समय के बाद मलक्का की किले बन्दी तोड़ दी गई।

१८११ ई० में लार्ड मिंटो के अधिकार में एक सेना मलक्का से जावा द्वीप के विजय के लिये चली। उसके बाद जावा पर ५ वर्ष तक अँग्रेजों का अधिकार रहा और स्टैम्फोर्ड रैफल्स वहां का गवर्नर बना रहा। १८१६ ई० में संधि के अनुसार जावा फिर डच लोगों को वापस कर दिया गया।

१८१९ ई० में जोहोर के बादशाह के साथ अँगेजों की संधि हुई और रैफल्स को सिंगापुर मिला। उसके बाद अँगेजों ने सिंगापुर की उन्नति की ओर ध्यान दिया और १९२१ ई० में (१०० वर्ष) में ही सिंगापुर की जन-संख्या ३ लाख ५० हजार हो गई और वह संसार के बड़े बन्दरगाहों में गिना जाने लगा।

१८६७ ई० तक स्टेट सेटेलमेंट्स के राज्य भारतीय सरकार के आधीन रहे। उसी वर्ष वह सम्राट् के देश बना दिये गये।

१७९८ ई० में केदाह के बादशाह ने अँग्रेज़ों को वेलेज़ली का प्रान्त दिया। १८२६ और १८७४ ई० के

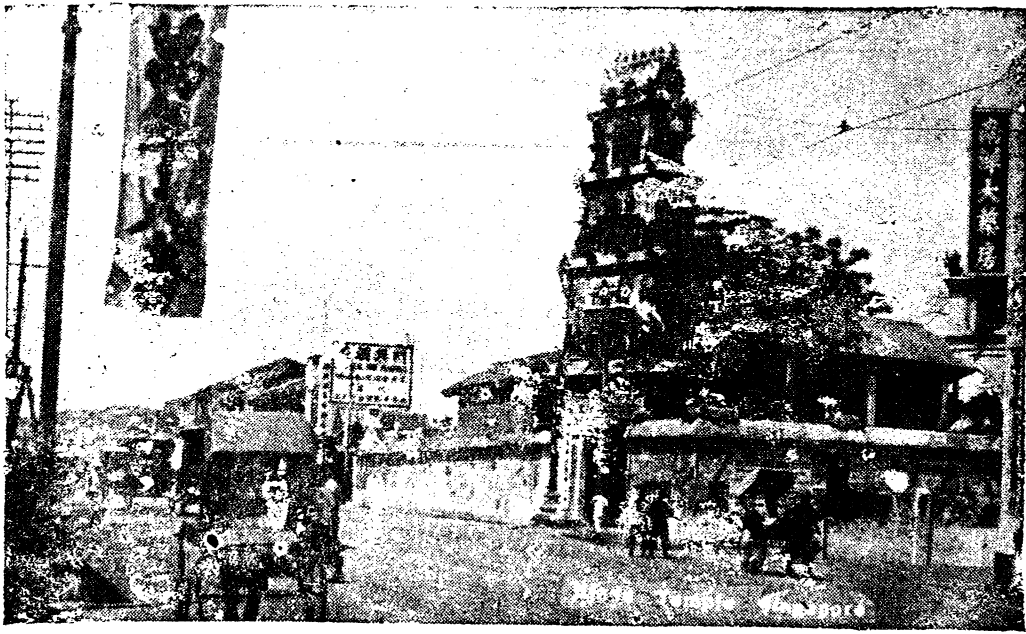
मध्य डिंडिंगस का प्रान्त पेराक के बादशाह ने अँग्रेज़ों को दिया। १६०० ई० में क्रिस्मस का द्वीप सिंगापुर में मिला दिया गया।

१६०३ ई० में कोकासया कीलिंग द्वीप समूह स्ट्रेट सेटेलमेंट में मिला दिये गये। १६०७ ई० में लावान स्टेटसेटेलमेंट में मिला दिया गया। १६१२ ई० में वह एक अलग सेटेलमेंट बनाया गया।

जब १६१४ का महासमर छिड़ा तो सम्राट् के देशों में केवल मलय प्रायद्वीप ही एक देश था जो सब से अधिक धनी था।

१६१५ में पेनांग में जर्मन लड़ाका जहाज़ एमडन ने आक्रमण किया और एक रूसी लड़ाका जहाज़ तथा एक फ्रांसीसी विध्वंस कारक जहाज को नष्ट किया। कोकोस द्वीप के समीप आस्ट्रेलिया के लड़ाका जहाज़ सिडनी ने उसे नष्ट कर के डुबो दिया था।

फरवरी सन् १६१५ में फिफथ इण्डियन इन्फैंट्री ने बलवा किया और ४० अँग्रज़ों को गोली से मार डाला। सम्मिलित मलय राज्यों ने मलय नामक लड़ाका जहाज सम्राट् की सरकार को गत महायुद्ध में भेंट स्वरूप दिया



सिंगापुर का चीनी मन्दिर ।



सिंगापुर का बन्दरगाह

था। जोहोर के बादशाह ने एक हवाई स्क्वैडरन भेंट किया था। करोड़ों रुपया वहां से युद्ध के लिये सहायता रूप ब्रिटिश सरकार को दिया गया था वहां से २५०० सैनिक ब्रिटिश सेना में सम्मिलित हुये और युद्ध में उन्होंने बड़े बड़े काम किये। १६२२ में वेल्स के राज कुमार वहाँ गये और उन्होंने वहां के वीरों की याद में सिंगापुर में उनकी समाधियों का उद्घाटन किया।

१६२० में मलय के व्यापार में हानि हुई क्योंकि वहां की उपज का मूल्य घट गया था उसके बाद संसार में सभी वस्तुओं का मूल्य घट गया जिस से व्यापार को बड़ा धक्का पहुँचा।

१६२३ में एक बड़ा बांध बनाया गया जिससे मलय प्रायद्वीप और सिंगापुर के मध्य रेलगाड़ियां तथा दूसरी गाड़ियां आने जाने लगीं। १६२३ में ब्रिटिश सरकार ने सिंगापुर में समुद्री अड्डा बनाने का निश्चय किया। १६२३ में पेनांग पहाड़ी की रेलवे खोली गई। १६२६ में सम्मिलित मलय राज्यों ने ३ करोड़ रुपया सिंगापुर के समुद्री अड्डे के लिये दान दिया।

१६ अगस्त १६२६ ई० को सरवक और सिंगापुर

के मध्य चलने वाली प्रथम हवाई डाक सिंगापुर पहुंची। और चार दिन के बाद वही समुद्री विमान सिंगापुर से स्वेटनहाम डाक ले कर गया।

स्टेट सेटेलमेंट में १८६७ से अब तक १२ गवर्नर नियुक्त हो चुके हैं। स्टेट सेटेलमेंट में सिंगापुर, पेनांग और मलक्का के द्वीप शामिल हैं। ऊपर इन्हीं के इतिहास का वर्णन किया गया है।

मलय राज्यों का शासन सेटेलमेंट राज्यों से भिन्न है। सम्मिलित मलय राज्यों में पराक प्रथम राज्य था जो सब से पहले ब्रिटिश संरक्षता में आया। पराक में बलवा होने पर ब्रिटिश सरकार ने वहां शान्ति स्थापित की और १८७४ में पंगकार स्थान पर पेराक के राजा तथा ब्रिटिश सरकार के मध्य संधि हुई। संधि के अनुसार वहां के राजा को अपने देश के धार्मिक रीत-रिवाजों को छोड़ कर सभी कामों में ब्रिटिश राजदूत की सलाह लेनी पड़ती है।

सेलांगारे में भी गृह-युद्ध और समुद्री डाके के कारण १८७४ में एक राजदूत रक्खा गया।

उसी वर्ष नेग्री सेम्बिलान की संरक्षता का भी

श्रीगणेश हुआ। सुङ्गीयुजोंग में दातोंक्लान और दातो बन्दर नामक दो सरदार लड़ रहे थे उनकी लड़ाई का अंत करने के लिये अँग्रेजों ने सुंगी युजोंग पर अधिकार कर लिया। उसके बाद जेलेबू, रेम्बा, जोहोल और श्री मेनान्ती आदि राज्य ब्रिटिश संरक्षता में आ गये। १८९५ में यह तीनों राज्य नेग्रो सेम्बिलान राज्य में मिल गये।

पहंग में एक चीनी की मृत्यु पर झगड़ा आरम्भ हुआ जिसके कारण १८८१ में वहां के शासक ने ब्रिटिश सलाहकार की मांग की।

मलय राज्यों का आधुनिक शासन बड़ी कठिनाइयों के बाद स्थापित हुआ है। पेराक का प्रथम अँग्रेज राजदूत मिस्टर वर्च मार डाला गया था उसके पश्चात् पहंग में भी कुछ गड़बड़ी हुई। राजदूत के मारने पर अँग्रेजों और मलय राज्यों में युद्ध छिड़ गया परन्तु शीघ्र ही वहां पर अँग्रेजों का शासन जम गया।

जुलाई १८९६ ई० में पेराक, सेलांगार नेग्री सेम्बिलान और पहंग चारों राज्य मिल गये और मलय सम्मिलित राज्य के नाम से प्रसिद्ध हुये। वहां का सब

से बड़ा ब्रिटिश अफसर सरकार का चीफ सेक्रेटरी (प्रधान सचिव) कहलाता है। सब मे पहला प्रधान सचिव सर फ्रैंक स्वेटेनहम हुआ। संयुक्तराज्यों की राजधानी क्वाला लुम्पुर है।

केदाह, पेर्लिस, केलांटन और ट्रेंगानू आदि राज्य १६०६ की स्थायी संधि के अनुसार ब्रिटिश संरक्षता में आ गये। १६१४ ई० में जोहोर राज्य में ब्रिटिश सलाहकार रक्खा गया है। यह राज्य इस बात का स्वयम् निर्णय करेंगे कि वह एक साथ संयुक्त रूप से रह सकते हैं या नहीं।



निवासी

किसी भी देश की जन-संख्या में बच्चों की उत्पत्ति तथा विदेशियों के आने के कारण भीषण परिवर्तन होता है।

गत कई सदियों से मलय प्रायद्वीप की जन संख्या विदेशियों के आगमन के कारण बढ़ी है। भारतवर्ष, चीन और अरब देश से लोग मलय में आये और उन्होंने अपने धर्म, रिवाज और भाषा से इसे प्रभावित किया। सन १९१५ ई० के बाद से विदेशी लोग और अधिक संख्या में मलय आये। १९१५ से १९२५ ई० तक एक लाख पचास हजार सालाना के हिसाब से चीनी आते रहे। १९२६ ई० में ३ लाख ४८ हजार ४ सौ ९३ चीनी मलय में आये। जितने लोग चीन से आये उनमें आधे से अधिक लोग मलय में रहने लगे।

चीनियों के अतिरिक्त भारतीय लोग भी मलय में जाते रहे। १९२६ ई० में प्रथम ६ मासों में स्वेटम हाम में लगभग एक लाख भारतीय गये। व्यापार के लिये योरुपीय, जापानी और दूसरी जातियां भी मलय में आती रहीं।

मलय का प्रधान रोजगार टीन और रबड़ का है। इसी रोजगार के कारण विदेशी वहां आते हैं।

पहले विदेशियों का यह नियम था कि मलय आते समय अपनी स्त्रियों को वह अपने घरों पर छोड़ आते थे परन्तु अब सभी अपने स्त्रियों को साथ ले आते हैं। अधिकांश स्त्रियां मलय निवासी हो जाती हैं। इसी कारण अधिक बच्चों की वहां उत्पत्ति होती है।

मलय सरकार बीमारी से रक्षा के लिये अच्छा प्रबन्ध करती है। अच्छे २ औषधालयों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ रही है। रियासतों के काम करने वाले मज़दूरों के लिये औषधि सम्बन्धी सुप्रबन्ध करने पड़ते हैं। प्रत्येक मार्ग और सड़क पर औषधालय बनाए गये हैं।

मलेरिया वाले स्थान मच्छड़ों से साफ करके रहने योग्य बनाये गये हैं। स्त्रियों को बच्चों को पालने की शिक्षा दी जाती है जिससे बच्चे कम मरते हैं। इन्हीं उपरोक्त कारणों से मलय की जन संख्या बढ़ रही है।

मलय प्रायद्वीप के आदिनिवासी सेमगस हैं। इस जाति के निवासी फिलीपाइन और अंडमान द्वीपों में

पाये जाते हैं। सीधे बाल वाले सकै लोग इण्डोचीन से आये। सेलंगोर के तट पर कुछ सकै जाति वाले घर बना कर रहते हैं शेष लोग देश भर में इधर उधर घूमा करते हैं और मामूली फलों तथा शिकार पर अपना जीवन व्यतीत करते हैं।

महँग, नेग्री सेम्बिलान और जोहोर प्रान्तों में जाकुन जाति वाले पाये जाते हैं। यह लोग वंकालिस और सिंगापुर में रहते हैं। वहां यह लोग ओरंग लौट के नाम से प्रसिद्ध हैं। यह लोग मुसलमान नहीं हैं। इनमें से बहुतेरे सभ्य मलय बन गये हैं। मलय जाति पहले ओरंग मलायु के नाम से प्रसिद्ध थी।

आधुनिक मलय लोग सुमात्रा के निवासी हैं। मलय संस्कृति के प्राचीन केन्द्र पलेमबंग नदी की घाटी, सेनांग कावौ (मध्य सुमात्रा) स्याक, कम्पर और इन्द्रगिरि नदियों में थे। इन लोगों ने मलक्का को व्यापारिक केन्द्र बनाया।

मलय में अँग्रेज़, फ्रांसीसी, डच, अमरीकन आदि पश्चिमी देश के निवासी व्यापार सम्बन्धी कार्य करते हैं। अँग्रेज़ लोग प्रत्येक शासन विभाग में पाये जाते हैं। सिंगापुर में कई हज़ार योरुपीय लोग हैं।

विदेशी निवासियों में सबसे अधिक संख्या चीनी लोगों की है। सिंगापुर में तीन चौथाई चीनी लोग निवास करते हैं। यह लोग प्रायद्वीप के सभी भागों में बड़ी संख्या में पाये जाते हैं। मलय प्रायद्वीप की बहुत सी खानें, जहाज़ी लाइनें, नगरों की जायदाद और छोटे राज्य आदि चीनियों के अधिकार में हैं। मलय में अधिकांश व्यापारी, विद्यार्थी और यात्री चीनी ही दिखाई पड़ते हैं।

चीनियों के बाद भारतीय लोगों की संख्या है भारतीय लोगों में वहां पर अधिकांश संख्या तामिल लोगों की है। यह लोग अधिकतर खेती करते हैं। भारतीय व्यापारी, क्लर्क आदि भी मलय में बहुत हैं। इनके सिवा अरब, जापान, जावा आदि के निवासी भी वहां पर हैं। बहुत से मलय निवासी (मलय भाषा बोलने वाले) ऐसे भी हैं जिनके माता पिता विदेशी हैं।

सकै और सेमंग जातियां किसी धर्म को नहीं मानती हैं। मलय में हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, सिख आदि जातियां मलय में रहती हैं।



आने जाने के साधन

किसी भी देश की उन्नत्ति वहां के आने जाने के साधनों के सुगमता से होती है। मलय प्रान्त में इन भीतरी साधनों की काफी न्यूनता है परन्तु सिंगापुर, पेनांग, स्वेटनहम, मलक्का आदि बन्दरगाहों पर संसार के बड़े बड़े जहाज़ आते जाते रहते हैं। तटीय स्टीमर स्थानीय तथा एशिया के दूसरे बन्दरगाहों के मध्य चला करते हैं।

१—सिंगापुर से मलक्का, पोर्ट डिक्सन, स्वेटनहम तेलोक, अनसन और पेनांग को जहाज़ी मार्ग हैं।

२—सिंगापुर से पेनांग, रंगून और कलकत्ता का जहाजी मार्ग है।

३—सिंगापुर या पेनांग से बेलवान, सबंग और सुमात्रा के पश्चिमी तटीय बन्दरगाहों को मार्ग जाता है।

४—सिंगापुर से पलेम्बंग बटेविया, सेमरंग, सौराबया और पूर्वी आस्ट्रेलिया को मार्ग जाता है।

५—सिंगापुर से रिआयु, सिंगकावंग और पश्चिमी बोर्नियो को जलमार्ग जाता है।

६—सिंगापुर से पश्चिमी आस्ट्रेलिया को।

७—सिंगापुर से पहँग, ट्रेङ्गान, केलांटन, पटनी, सेङ्गोरा होते हुये बङ्कोक को जलमार्ग जाता है।

८—सिंगापुर से सरावक, लबुवान, ब्रिटिश उत्तरी बोर्नियो को जलमार्ग है।

९—सिंगापुर से दक्षिणी चीन के बन्दरगाहों का जलमार्ग।

१०—पेनांग से केदाह और पेर्लिस बन्दरगाहों का जलमार्ग।

अधिकांश स्थानीय स्टीमरों पर ब्रिटिश झंडा लगा रहता है परन्तु इसके सिवा जापानी और राष्ट्रीयता के भी जहाज़ हैं।

भाप, कल और मोटर से चलने वाले छोटे स्टीमर किराये पर सिंगापुर और पेनांग बन्दरगाहों से चला करते हैं। सिंगापुर से पेनांग ३९५ मील है और अन्य स्थानों के जलमार्ग की दूरी निम्न प्रकार है :—

सिंगापुर	से	मलक्का	११७ मील
"	"	पलेबंग	३०० "
"	"	बटाविया	५२१ "
"	"	पोरिटर्याक	३४८ "

सिंगापुर	से	कुचिंग	४३५ मील
”	”	लबवान	६३६ ”
”	”	बेलवन	३६५ ”
पेनांग	”	बंकाक	८३३ ”
”	”	पेलावन	१५१ ”
”	”	अलोर स्टार	५२ ”

रेलवे लाइन

सब से पहली रेलवे लाइन टैपिंग पोर्ट वेल्ड है। यह आठ मील लम्बी बनाई गई थी। आज कल मलय में एक हजार मील से अधिक रेलवे लाइन है। इसका नाम यू० एम० एस० (संयुक्त-मलय-राज्य) रेलवे है।

मलय राज्य की प्रधान रेलवे लाइन सिंगापुर से प्राई को जाती है। यह पेनांग के दूसरी ओर है। लाइन की एक शाखा बुकित मर्तजाम के उत्तर की ओर केदाह और पेर्लिस होकर स्याम (थाई देश) को जाती है और फिर वह थाई देश की सरकारी रेलवे से मिला दी जाती है। इस प्रकार सिंगापुर से बंकाक की रेल यात्रा सरलता पूर्वक की जा सकती है।

निम्नांकित रेलवे लाइनें जनवरी सन् १९२७ ई० में खोली गई थीं।

प्रधान रेलवे लाइन

सिंगापुर से पेनांग को:—इस मार्ग में यात्रा करने से जोहोर, जेमस, टैपिन सेरेम्बन, क्वाला, लुम्पुर, क्वाला, कूबू, तपाह रोड इपोह टैंपिंग बुकित मेर्टाजम और पेराह आदि स्थान मार्ग में पड़ते हैं।

बुकित मर्तजाम से रेलवे लाइन सुंगी पत्तानी और अलारेस्टार होकर जाती है। यह थाई सीमा पर पेर्लिश से पदंग बेसर लाइन को पार करती है और फिर थाई देश की रेलवे से जाकर मिल जाती है।

छटीं रेलवे लाइनें

१—टैम्पिन से मलक्का को, २—सेरेम्बन से डिक्सन बन्दर को, ३—काला और लुम्पुर से स्वेटनहाम बन्दर को, ४—कोनाट पुल के जंकशन से काला सेलंगोर को, ५—काला लुम्पुर से बातूकेव्स को, ६—सुल्तान स्ट्रीट से अभ्यंग को, ७—कांग से बतंग वजुंताई को, ८—तपाह रोड से तेलोक अंसन को, ९—इपोह से ट्रोनास को और १०—टैपिंग से वेल्ड के बन्दर को रेलवे लाइनें जाती हैं।



१९२६ ई० में पूर्वी तट रेलवे लाइन (१६४ मील) खोली गई। यह जेमस से चिगार पेराह को और दक्षिण की ओर टुम्पार से क्राई को जाती है। इस रेलवे का अन्त क्राई से १५ मील आगे था। अब यह रेल पहाँग तक जाती है।

ब्रिटिश मलाया की सड़कें बड़ी सुन्दर तथा स्वच्छ हैं। प्रत्येक यात्री वहाँ की सड़कों का मोटर द्वारा भ्रमण करता है। इन सड़कों पर मोटर लारियाँ तथा बसें चला करती हैं।

सिंगापुर, पेनांग नगर में ट्रामवे गाड़ियाँ चलती हैं। जब से सर रास स्मिथ ने योरुप से (सिंगापुर होकर) आस्ट्रेलिया की यात्रा विमान द्वारा किया तब से हवाई मार्ग द्वारा यात्रा करने का रिवाज बढ़ गया है। अब मलय के एक भाग से दूसरे भाग को हवाई डाक जाती है। सिंगापुर संसार के हवाई डाक का एक प्रसिद्ध अड्डा है।

मलय प्रायद्वीप में तीन प्रकार के तार हैं। १—पनडुब्बा (सबमेरीन केबुल) २—स्थली तार ३—बेतार का तार (रैडियो)। मलय प्रायद्वीप के प्रधान व्यापारिक

नगरों के मध्य टेलीफोन लगे हैं। सिंगापुर से पेनांग को टेलीफोन दिया जा सकता है।

मलय कोई बड़ा कारखाने वाला देश नहीं है। खेती तथा खान खोदने का काम यहां अधिक होता है। रबड़ की भी उपज बहुत की जाती है।

सारा रबड़ से गाड़ियों के टायर, फर्श पर बिछाने का सामान, बिजली के तार, ढकने का सामान, मोज़े, जूते, इलास्टिक आदि भांति भांति के सामान तयार किये जाते हैं। गंधक मिलाकर रबर को सख्त बनाते हैं और फिर उससे कंघे आदि तयार किये जाते हैं। पहले जहाँ कहीं भी रबड़ के वृक्ष बनों में पाये जाते थे उनसे रबड़ का दूध निकाल कर रबड़ तयार होता था। दूध निकालने का काम बड़ी बेपरवाही के साथ होता था इसलिये अधिकांश वृक्ष सूख जाते थे। मलय में रबड़ के बनों को जेलूतोंग कहते हैं।

रबर की मांग बढ़ जाने पर रबड़ की अधिक उत्पत्ति भी की गई। ब्राज़ील से रबड़ के पौदे इंगलैंड मंगाये गये। वहां से मलय प्रायद्वीप में ले जाकर लगाये गये। मलय में रबड़ की उत्पत्ति की वृद्धि बड़ी शीघ्रता से हुई।



१९०६ ई० में ४३० टन, १९१६ में ९९ हज़ार ६३ टन और १९२६ ई० में ३ लाख टन (१ टन = २८ मन) से अधिक रबड़ मलय से बाहर भेजा गया। आज संसार में मलय प्रायद्वीप रबड़ की उपज करने वाले बड़े प्रदेशों में गिना जाता है।

मलय में रबड़ के रोज़गार के बाद टीन का रोज़गार है। टीन खानों से निकाली जाती है। चीनी लोग मलय प्रायद्वीप में अँग्रेजों के आने के बहुत पहले से ही टीन की खानों को खोदाई में लगे थे। १७८७ ई० के पश्चात् से अँग्रेज़ों ने टीन की खोदाई आरम्भ की। मलय प्रायद्वीप, बांका, बिलीटन और सिंगापुर के द्वीप (डच) आज संसार में बड़े टीन वाले प्रदेश हैं। टीन की उपज में मलय के बाद बोलिविया का नम्बर है। किंता घाटी (पेराक) और क्लाँग नदी की घाटी (सेलङ्गोर) में टीन बहुत पाया जाता है।

टुग्स्टेन—धातु वोल्फ्रैम धातु से तयार की जाती है। इससे बिजली की बत्तियों के लिये सुन्दर तार बनाये जाते हैं। यह फौलाद को कड़ा करने के लिये उसमें

मिलाया जाता है। जहाजों के चद्दर और तोप बनाने वाले फौलाद में भी यह धातु मिलाई जाती है।

सोना—मलय प्रायद्वीप में कम मिलता है। आज कल पहँग में केवल रऊब गोल्ड माइन्स नामक एक कम्पनी सोना निकालने का काम कर रही है। पहँग, पहंग और पेराक में भी कुछ थोड़ा सोना मिलता है।

कोयला—खँग (सेलंगोर) में निकाला जाता है। १६१६ ई० में वहां की खान से एक लाख ६१ हजार २ सौ ६३ टन और १६२५ ई० में ४ लाख ७ हजार ७ सौ ३४ टन कोयला निकाला गया था। इस खान का अधिकांश कोयला रेलों तथा खानों में खर्च हो जाता है। बाहर बहुत कम भेजा जाता है।

चीनी मिट्टी—पेराक और जोहोर में पाई जाती है। यह कागज और कपड़ा तयार करने के काम आती है। इसकी ईंटें तथा मिट्टी के बर्तन भी बनाये जाते हैं।

नारियल का बृक्ष बड़ा ही उपयोगी होता है। कच्चा नारियल खाने और मिठाई बनाने में प्रयोग होता है। इसके भीतर का पानी या दूध पीने के काम आता है। नारियल का तेल जलाने, लगाने और साबुन तयार

करने में काम देता है। इसके रस से गुड़ और चीनी तयार किये जाते हैं। पत्तों के पंखे तथा चटाइयां बनती हैं। नारियल के जूट की सुन्दर रस्सी तयार होती है। इसकी लकड़ी भी भांति भांति के कामों में प्रयोग की जाती है। गरी खाने के काम आती है। नारियल की खोपड़ी से भी कई प्रकार के सामान तयार किये जाते हैं।

प्रतिवर्ष साढ़े तीस करोड़ रुपये की नारियल की गरी बाहर भेजी जाती है। मलय प्रायद्वीप के निर्यात में रबड़ और टीन के बाद नारियल की ही गणना है।

मलय में धान की उपज अच्छी होती है। धान क्रिअन, पेराक, वेलेजली प्रान्त, मलक्का, केदाह और पेर्लिस प्रान्त में होता है। यह मलय निवासियों की खास खूराक है। मलय निवासी धान को पैडी, चावल को ब्रैस, पके चावल को नैसो, बुलोर और पुलूत कहते हैं।

टैपिओका—यह एक प्रकार की माड़ी है जो पूर्वी कायु नामक पौदे की जड़ से तयार की जाती है। पौदे की जड़ें कलों से पीस डाली जाती हैं और लेई गढ़ों में

डाल दी जाती है। जब उसको लकड़ी सड़ जाती है। तो उसे साफ कर लेते हैं और फिर छोटी २ गोलियां बना लेते हैं।

साबूदाना—टैपिओका की भांति यह भी तयार किया जाता है। साबूदाना के पौदे जब ६ या सात वर्ष के हो जाते हैं तो उन्हें काट कर गिरा देते हैं और उसे बीच से फाड़ कर माड़ी निकाल लेते हैं उसी माड़ी से साबूदाना तयार किया जाता है। यह भारतवर्ष, चीन आदि विदेशों को भेजा जाता है।

गैम्बीर—यह एक प्रकार की जड़ी बूटी है। इसका पौदा ६ से ८ फुट तक ऊँचा होता है। इसकी पत्तियां बीच बीच में तोड़ ली जाती हैं। पत्तियों को बड़े बर्तनों में उबाल कर खाकी रंग की गोंद निकाली जाती है जिसका प्रयोग चमड़ा तयार करने और रंगाई करने में किया जाता है।

क़हवा—मलय में कई प्रकार का होता है। इसके पौदे ६ से २० फुट तक ऊँचे होते हैं। इसका फूल सफेद सुगन्धित होता है। इसके दाने अथवा बेर पत्थर की छोटी गोली की भांति होते हैं। दोनों को धूप में सुखाना

पड़ता है। सूखे दानों को भूनकर पीसा जाता है उसके बाद प्रयोग करने योग्य कहवा तयार होती है।

सुपारी—मलय प्रायद्वीप में सुपारी बहुत पैदा होती है। प्रति वर्ष लगभग ५ करोड़ रुपये की सुपारी मलय से बाहर भेजी जाती है।

मछली—के रोजगार में लगभग ५० हजार लोग लगे हैं और प्रतिवर्ष लगभग ५ करोड़ रु० की मछली बाहर भेजी जाती है।

लकड़ी—मलय प्रायद्वीप में यह बहुत है। वहां जहाज़ और मेज़, कुर्सी आदि लकड़ी के सामान तयार करने का अच्छा रोज़गार होता है। बेत और रैटन से से मेज़, कुर्सी, टोकरी आदि तयार किये जाते हैं।

मलय प्रायद्वीप में टोकरी धातु के तार आदि बनाने का अच्छा रोजगार होता है।

टॅंगान, केलांतन की स्त्रियां रेशम और रुई के सुन्दर सारांग तयार करती हैं। चांदी, सोने का सामान भी बहुत अच्छा तयार किया जाता है।

देश दर्शन

सिंगापुर

यह द्वीप मलय प्रायद्वीप के दक्षिण में स्थित है। यह मलय से जोहोर जल डमरूमध्य द्वारा अलग है। जोहोर जल डमरूमध्य की चौड़ाई तीन चौथाई मील है। सिंगापुर का क्षेत्रफल २१७ वर्गमील है और जनसंख्या ४ लाख १८ हज़ार ४ सौ (नगर की ३ लाख १५ हज़ार) है।

सिंगापुर नगर सिंगापुर द्वीप के दक्षिण की ओर स्थित है और विषुवत रेखा से ९० मील उत्तर की ओर है। यहाँ की जलवायु गरम और नम है परन्तु चारों ओर पानी से घिरे होने के कारण गरमी कम हो जाती है।

सिंगापुर का बन्दरगाह बहुत प्रसिद्ध है। बाहरी बन्दरगाह में बहुत अधिक जहाज़ ठहर सकते हैं। भीतरी बन्दरगाह में छोटे जहाज़ ही आकर ठहर तथा अपने सामान उतार चढ़ा सकते हैं। सिंगापुर, पुलापु, ब्रानी और ब्लैकंगमती के मध्य केपेल बन्दरगाह है। सिंगापुर बोर्ड के घाट दो मील तक फैले हैं जहाँ पर बहुत बड़ी संख्या में जहाज़ ठहर सकते है। घाटों में छोटे बड़े सभी प्रकार के जहाज़ों को ठहरने की सुविधा है। इन घाटों

का सामूहिक नाम टंजोङ्ग पगर है। पश्चिम की ओर पी० और ओ० तथा केबुल कम्पनी के घाट हैं।

सिंगापुर में तीन सूखे (ड्राई) घाट हैं। किंग्स तकरेज़ नहर के पूर्व की ओर सबसे बड़ा ग्रेविंग वाला घाट है। इसके सिवा विक्टोरिया और अल्बर्ट घाट हैं। केपेल बन्दर पर केबुल कम्पनी का एक सूखा घाट है। सिंगापुर और रोचोरे नदियाँ खाड़ियों की भांति हैं। उनके किनारों पर छोटी छोटी नावों के बाँध या घाट हैं जो जहाज़ से सामान उतारने अथवा लादने में बड़े सहायक होते हैं।

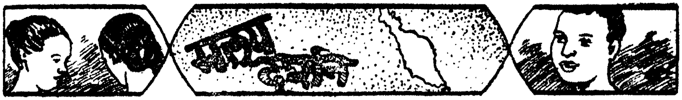
द्वीप के उत्तर की ओर एक जहाज़ी सैनिक अड्डा बनाया गया है। इस अड्डे पर जहाज़ों के ठहरने का अच्छा प्रबन्ध है। टूटे जहाज़ों की मरम्मत के लिये सुगम स्थान बनाये गये हैं। इस अड्डे पर बड़े बड़े जहाज़ निर्भय और आनन्दपूर्वक खड़े रह सकते हैं। इस अड्डे पर ब्रिटिश साम्राज्य के जो लड़ाका जहाज़ पूर्व की ओर हैं वह कोयला-पानी, आवश्यक सामग्री लेने तथा अपने बिगड़े भागों को बनवाने के लिये आते हैं। क्राञ्जी, सेम्बावांग और सेलेतर आदि ज़िलों में किलेबन्दी कर दी गई है।

सिंगापुर की स्थिति बड़े मार्के की है। यह भारत का पूर्वी द्वार है। इस बन्दरगाह पर संसार के सभी भागों के जहाज़ आकर ठहरते हैं। वर्तमान समय में इसका महत्व और भी अधिक बढ़ गया है। सिंगापुर में एक अच्छा हवाई अड्डा भी है। पुलायुब्रानी और ब्लांगगमती द्वीपों में सैनिक अड्डा है।

एफ० एम० एस० रेलवे सिंगापुर को पार करके उडलैण्ड्स को जाती है और फिर जोहोर जल डमरूमध्य को पार करती है। सिंगापुर द्वीप में इस रेलवे लाइन पर टैंक रोड न्यूटन, क्लनी रोड, हालैण्ड रोड, बुकित तिमाह, बुकित पंजंग मंडई और उडलैण्ड स्टेशन हैं।

उडलैण्ड्स से एक शाखा इस रेलवे लाइन से निकल कर सिंगापुर के समुद्री सैनिक अड्डे को जाती है। सिंगापुर नगर के बाहर द्वीप में १०० मील लम्बी सड़क है।

चावल, रुई, फुटकर सामान, खाने पीने का सामान, कोयला, अफीम, तम्बाकू, मदिरा और पशु आदि दूसरे स्थानों से सिंगापुर आते हैं और फिर दूसरे देशों को भेज दिये जाते हैं।



पेनाँग

पेनाँग सेटेलमेंट में पेनांग द्वीप, वेलेज़ली प्रान्त, डिनडिंग्स शामिल हैं। पेनांग की राजधानी जार्ज टाउन, वेलेज़ली, वाटरवर्थ और डिनडिंग्स की लूमट है।

मलय प्रायद्वीप का पेनांग द्वीप ही सब से पहले अंग्रेज़ों के हाथ लगा था। इसका क्षेत्रफल १०१०८ वर्ग मील और जन संख्या एक लाख बासठ हज़ार एक सौ चवालिस है। वेलेज़ली की जनसंख्या १ लाख ३० हज़ार ३ सौ ४१ है। डिनडिंग्स की जनसंख्या ग्यारह हज़ार आठ सौ पचास है।

पेनांग में चीनी और वेलेज़ली तथा डिनडिंग्स में मलय लोगों की जनसंख्या अधिक है। पेनांग में एक अच्छा बन्दरगाह है जहाँ योरुप, जापान, भारतवर्ष, अमरीका, आस्ट्रेलिया आदि से जहाज आकर ठहरते हैं।

यहाँ का बोटैनिकल बाग, चीनी मन्दिर (आयर स्टाम पहाड़ी पर) और सूर्य मन्दिर देखने योग्य हैं।

यहाँ टीन तयार करने के कारखाने हैं। नारियल फल और धान की उपज होती है।

पुलायु जेरेजक, पुलायु रियायु, पुलायु बिटोंग केंडी तिकुस यहाँ के मुख्य द्वीप हैं।

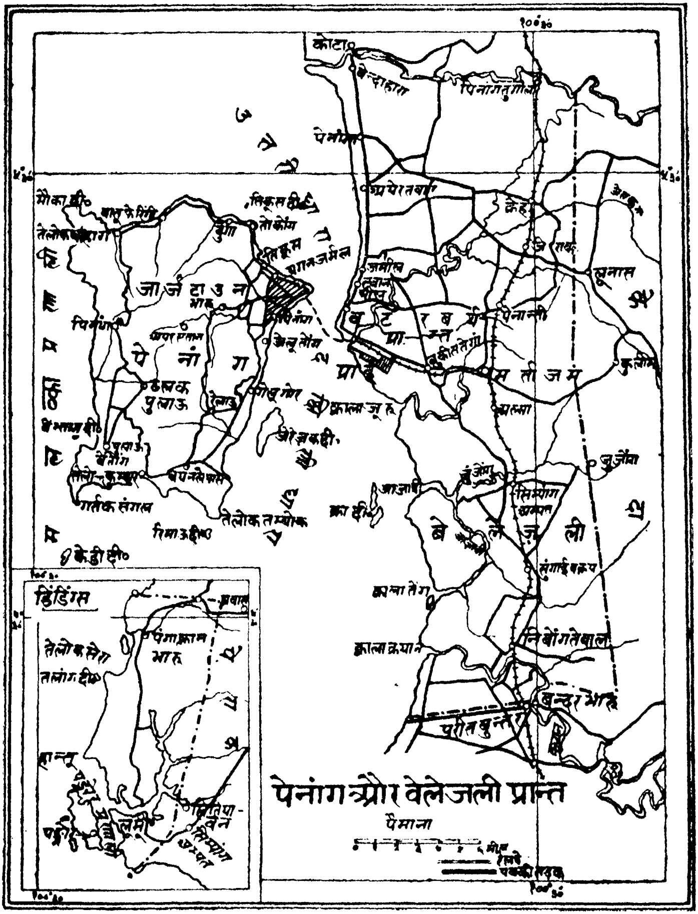
वेलेज़ली प्रान्त

यह पेनांग के दूसरी ओर स्थित है। इसका क्षेत्रफल २८० वर्गमील और जनसंख्या एक लाख तीस हज़ार है। यहां की मुख्य उपज धान, नारियल और रबड़ है। वाटरवर्थ, बुकित मेतीजाम, प्राग निबोंग टेबल आदि यहां के मुख्य नगर हैं।

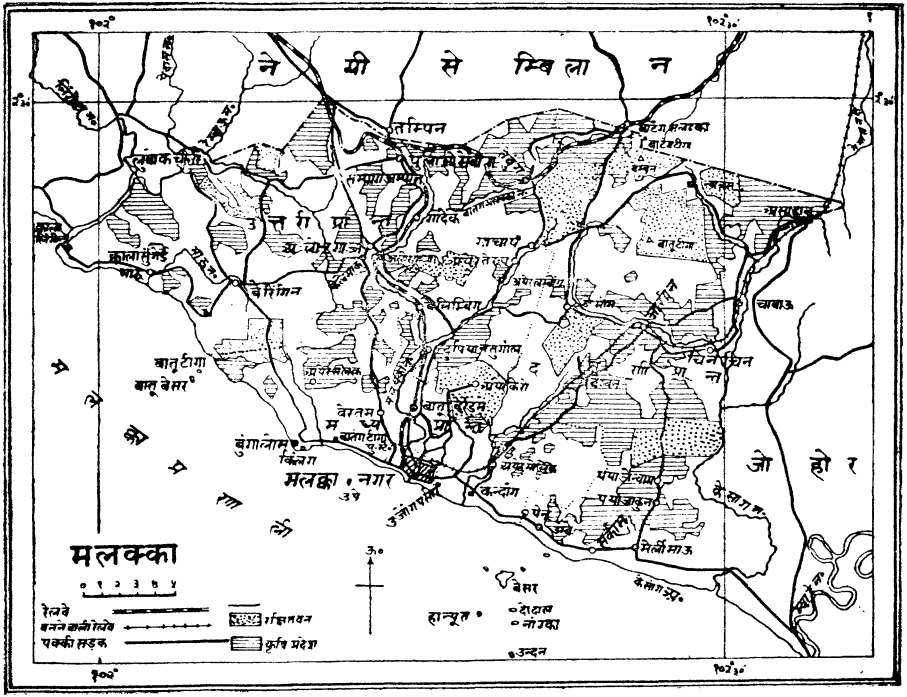
डिनडिंग्स

क्षेत्रफल १८३ वर्गमील, जनसंख्या लगभग १२ हज़ार है। मुख्य नगर लूमत, पंगलन, भारु और पंगकोर हैं।





पेनांग और वेलेजली प्रान्त


मलक्का
नेग्री सेम्बिलान
जोहोर
मलक्का नगर
तम्पिन
लुबाक चीना
बेरिसिन
बातू बेरेन्दम
उत्तरी प्रान्त
मध्य
दक्षिणी प्रान्त
मेर्लीमाऊ
कन्दांग
बुंगालाम
क्लिंग
चाबाऊ
जासिन
असाहान
बातू टीगा
बातू बेसार
पंपा जेन्याम
पपा जाकुन
कैसांग न.
उन्दन
रेलवे
बनने वाली रेलवे
पक्की सड़क
रक्षितवन
कृषि प्रदेश
मलक्का जलडमरूमध्य
१०२°
१०२° ३०'
२° ३०'
उ०



मलक्का

१५०१ ई० में पुर्तगालियों ने इस पर अधिकार जमाया। १७८५ ई० में यह अंग्रेज़ों के हाथ आया। इसका क्षेत्रफल ७२० वर्ग मील जन संख्या लगभग १ लाख ५५ हजार है। यहाँ मलय तथा चीनी लोगों की आबादी अधिक है। भारतीय, चीनी और अंग्रेजों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ रही है।

इसमें यूथेह, बेसार, बातू त्रिसार और बातू तीगा द्वीप शामिल हैं। यहाँ से सिंगापुर को जहाज़ आते जाते रहते हैं। एफ० एम० एस० रेलवे लाइन इस प्रान्त होकर जाती है। मलक्का, बातू बेरेंडाम, दूरियन तुंगल, अलोर गजह, गडेक और ताम्पिन रेलवे लाइन के मुख्य स्टेशन हैं। इस प्रान्त का भ्रमण मोटर द्वारा किया जा सकता है।

यह एक खेतिहर प्रान्त है। रबड़, कोपरा, टैपिओका, गैम्बियर, सुपारी और अदरक यहाँ की मुख्य उपज है। नारियल की उपज भी होती है। जो वस्तुएँ यहाँ पैदा होती हैं वही बाहर भेजी जाती हैं।

मलक्का, पुलायु सेबंग, अलोर गजह, टैम्पिन यहां के मुख्य नगर हैं।

देश दर्शन

कोकोस, क्रिस्मस और लाब्वान द्वीप

कोकोस और कीलिंग द्वीपसमूह, हिन्द महासागर, में बटाविया से ७०० मील दक्षिण की ओर स्थित हैं। इन द्वीपों में सब से बड़े द्वीप की लम्बाई ५ मील, चौड़ाई चौथाई मील और जन संख्या ८०० है।

क्रिस्मस द्वीप १९० मील जावा के दक्षिण में है। इसकी लम्बाई १२ मील चौड़ाई लगभग ९ मील और क्षेत्रफल लगभग ६३ वर्गमील है। यहां की जनसंख्या १,१०० है।

लब्वान द्वीप बोर्नियो के तट से ६ मील की दूरी पर है। क्षेत्रफल २८ वर्गमील और जनसंख्या ६ हज़ार है। यहां पर विक्टोरिया का अच्छा बन्दरगाह है।



संयुक्त मलय-प्रायद्वीप

इसमें पेराक, सेलंगोर, नेग्री सेम्बिलान और पहँग के राज्य सम्मिलित हैं। पहँग की राजधानी क्वाला लिपिस, सेसंगोर की क्वाला लुम्पुर, नेग्रो सेम्बिलान की सेरेम्बन और पेराक की टैपिंग है।

समस्त संयुक्त राज्य का क्षेत्रफल २७ हज़ार ६ सौ अड़तालिस वर्गमील है और जनसंख्या लगभग १५ लाख है। यहां गवर्नर मलय संयुक्त राज्य का हाई कमिश्नर कहलाता है। टैपिग में एक भारतीय सेना रहती है। इसके सिवा संयुक्त राज्य की सेनाएँ हैं। गत महायुद्ध में संयुक्त राज्यों ने मलय नामक लड़ाका जहाज़ ब्रिटिश सरकार को भेंट किया था वह भी अँग्रेज़ी बेड़े के साथ रहता है। संयुक्त राष्ट्रों ने १९२६ ई० में सिंगापुर में समुद्री सैनिक अड्डा बनाने के लिये २ करोड़ रुपया सहायतार्थ दिया था।

संयुक्त राज्य के सभी शासक मुसलमान हैं। वह धार्मिक प्रश्नों के सिवा सभी बातों में ब्रिटिश राजदूत की सलाह से काम करते हैं। चीनी तथा हिन्दू मन्दिर

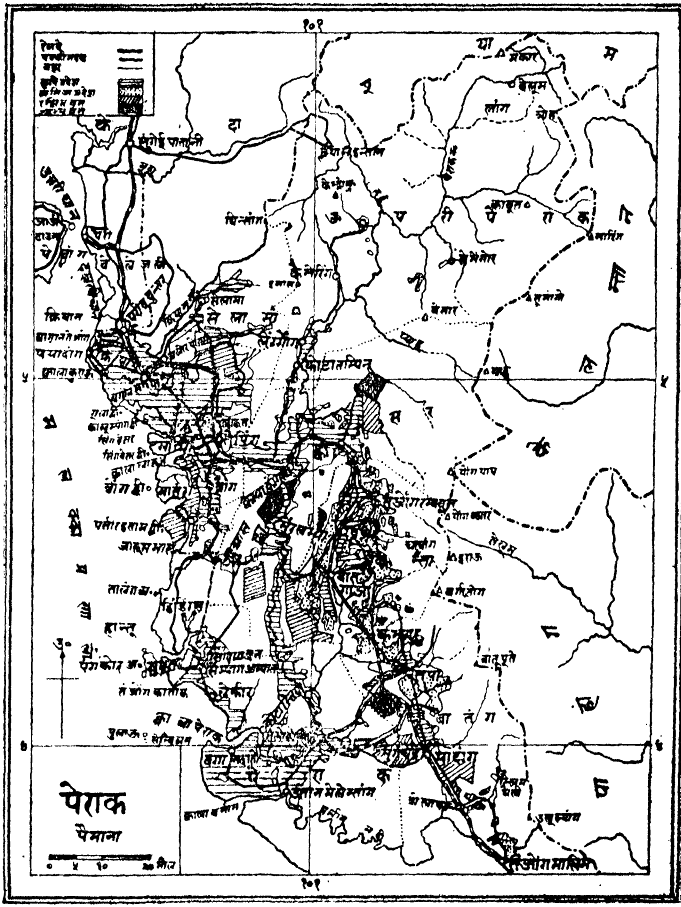
इन राज्यों में काफी संख्या में हैं। कोई भी व्यक्ति किसी के धार्मिक मामलों में दखल नहीं देता है।

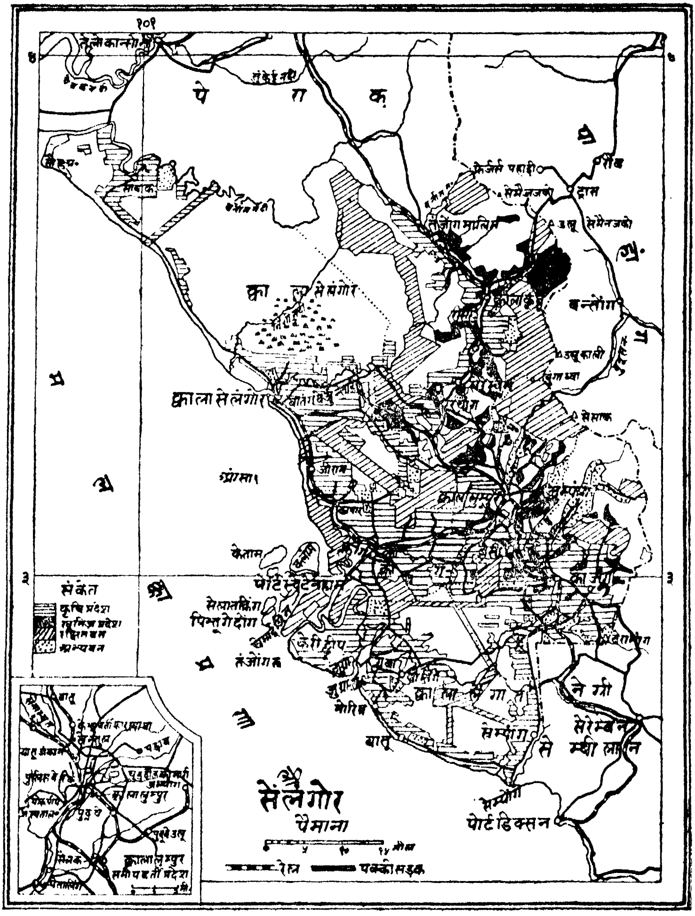
संयुक्त मलय राज्य की उपज टीन, खड़कोयरा, चावल, टैपिओका, गम्बीर, सुपारी है। सूअर और मछली यहां बहुत हैं। टीन, रबड़ के सिवा और दूसरी उपज वाली वस्तुएँ बाहर भेजी जाती हैं।

पेराक

संयुक्त मलय राज्य का एक भाग है। जनवरी १८७४ ई० की संधि के अनुसार ब्रिटिश राजदूत पेराक में रहने लगा। इस राज्य के बर्तमान शासक सिकन्दर सुल्तान हैं। राज्य का क्षेत्रफल ७८७५ व० मील और जन-संख्या ६ लाख है। यहां की मुख्य रेलवे लाइन एफ० एम० एस० है। बगन सराय, टैपिंग, क्वाला, कंग्सर, सुंगी सिपुत, चेमोर, तंजोङ्ग, रम्बुतान, इपोह, बातू गजह और कम्पर मुख्य स्टेशन हैं। तीन छोटी रेलवे लाइनें इस राज्य में हैं। पेराक राज्य में १००० मील पक्की सड़क है।

अंसोन, सितियावन, क्वाला कुरायु, क्वालागुला,


पेराक
पैमाना


सेलैंगोर
पैमाना
संकेत
कृषि प्रदेश
पोर्ट डिक्सन
पोर्ट स्वेटनहाम
सेरेम्बान
नेग्री
सेम्बीलान
क्वाला सेलंगोर
पिन्तू गेदोंग
पेराक
फ्रेज़र्स पहाड़ी
रेल
पक्की सड़क

वेल्ड बन्दर, बगनदतोह आदि छोटे बन्दरगाह हैं। तटीय स्टीमर तटीय स्थानों के मध्य चला करते हैं।

इस छोटे राज्य के मुख्य नगर टैपिंङ्ग, ग्रिक सेलम, परितबुंतर, मतंग, क्वाला कंग्सर, बातू गजह तेलोक अंसोन और तपाह हैं। किता और लारूत ज़िलों का मुख्य रोज़गार खान खोदना है।

सेलङ्गोर

यह संयुक्त मलय राज्य का एक छोटा राज्य है। १८७४ ई० में यह ब्रिटिश संरक्षता में आया और यहां पर ब्रिटिश राजदूत रक्खा गया। इस राज्य के वर्तमान शासक हिज हाईनेस सर अलाउद्दीन सुलेमशाह हैं।

इस राज्य का क्षेत्रफल १३९५ वर्ग मील और जन-संख्या लगभग ४ लाख है। इस राज्य में ६ ज़िले हैं। क्लांग नदी के मुहाने के समीप ग्रे, पी० लुमत, पी० क्लांग, अंग्स, मेलत क्रिंग, पी० पिन्तू गेदोंग और पी० केतम के छोटे छोटे द्वीप स्थित हैं।

क्वाला लुम्पुर के उत्तर और दक्षिण के प्रान्तों में बड़ी बड़ी खानें हैं। खंग की कोयले की खान से १९२६

ई० में ५ लाख टन कोयला निकला था । प्रतिवर्ष कोयले की मात्रा बढ़ती जा रही है । ओलफ्रैम और टुंग्स्टेन धातुएँ भी निकाली जाती हैं। रबड़ यहाँ की मुख्य उपज है। नारियल, चावल, कहवा की अच्छी उपज होती है।

तटीय लोग मछली मारने का रोज़गार भी करते हैं। इस राज्य के मुख्य नगर काला लुम्पुर, पोर्ट स्वेटनहम (संयुक्त मलय राज्य का मुख्य बन्दरगाह), कलांग, मोरिब, काला कूबू, सेरेन्दाह और खंग बातू केव्स, दुसुन तुवा, कजंग, काला सेलंगोर आदि हैं।

नेग्री सेम्बिलान

यह संयुक्त मलय राज्य का एक छोटा राज्य है। १८७४ ई० में यह ब्रिटिश शासन में आया। इस राज्य में सुंगी युजोंग, जेलेबू, रेम्बायु और जोहोल के छोटे राज्य शामिल थे। यहाँ के शासक मुहम्मद सुल्तान हैं। सुल्तान की सहायता के लिये ब्रिटिश राजदूत रहता है।

इस राज्य का क्षेत्रफल २५७२ वर्गमील और जन-संख्या लगभग दो लाख है। इस राज्य में सेरेम्बल,

जेलेबू, क्वाला पिलाह, कोस्ट, टम्पिन ज़िले हैं। एफ॰ एम॰ एस॰ रेलवे लाइन इस राज्य की मुख्य रेलवे लाइन है। तटीय भाग से भी एक रेलवे लाइन जाती है। इसके सिवा और दूसरी ब्रांच लाइनें हैं।

डिक्सन बन्दरगाह पर सिंगापुर से जहाज़ आकर ठहरते हैं। पेंगकलन केम्पस और क्वालालुकुत बन्दरगाहों से राज्य का माल बाहर भेजा जाता है।

टीन, रबड़, टैपिओका, गम्बीर और कोपरा आदि वस्तुएँ बाहर भेजी जाती हैं।

चावल, पिट्रौल, तम्बाकू, स्पिरिट, सूती कपड़े, आटा, दूध और चावल बाहर से राज्य में मँगाया जाता है।

इस राज्य के मुख्य नगर सेरेम्बन, पोर्ट डिक्सन, क्वाला पिलाह, क्वाला क्लावङ्ग, जेमस, टम्पिन, टीटी, पेंग्फलान केम्पस, लुकुत आदि हैं।

पहँग

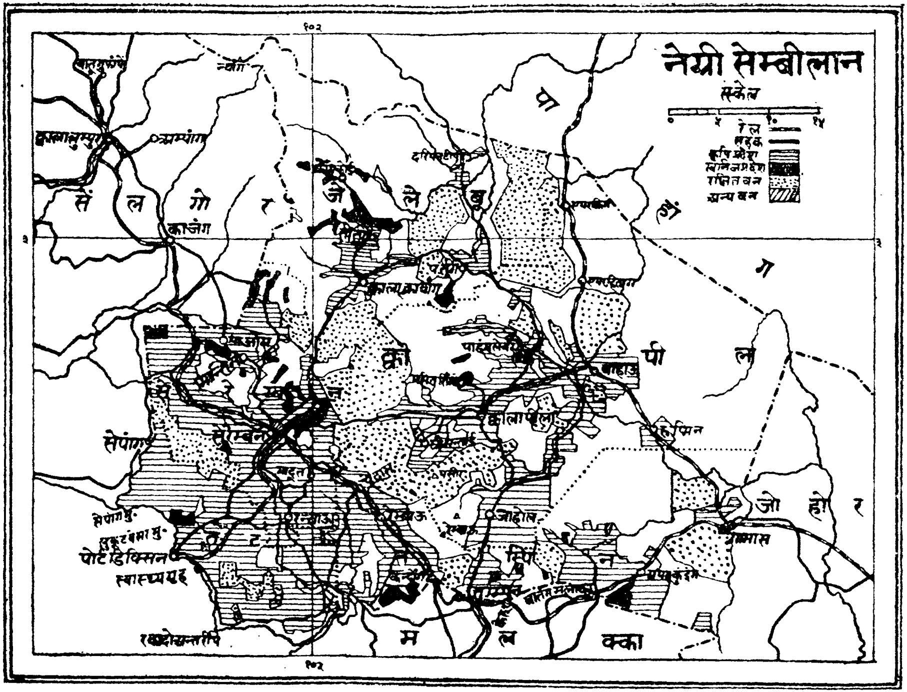
यह संयुक्त मलय राज्य का सब से बड़ा राज्य है परन्तु इसकी जन-संख्या कम है। इसका क्षेत्रफल १४

हज़ार वर्गमील और जन संख्या लगभग डेढ़ लाख है। पहले यह एक स्वतंत्र राज्य था। सन् १८८८ ई० में पेकन में एक चीनी ब्रिटिश प्रजा की हत्या हुई। उसी घटना के पश्चात् पहंग के शासक ने अपने यहां एक ब्रिटिश राजदूत रखना स्वीकार किया। १८९५ ई० में यह राज्य संयुक्त शासन में सम्मिलित हुआ।

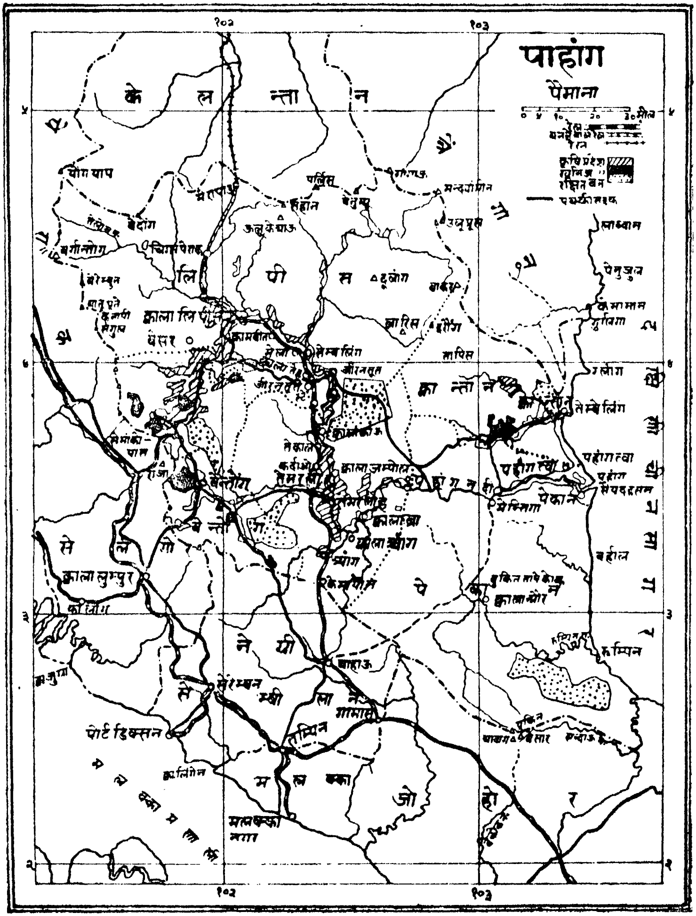
यह राज्य ६ जिलों में बँटा है। १—लिपिस (जिसकी राजधानी क्वाला लिपिस है), २—रऊब, ३—बेनतोंग (बेनतोंग), ४—तेमेरलोंह (तेमेलोंह), ५—क्वाँटन (क्वाला क्वाँटन) और ६—पेकान जिसकी राजधानी पेकान है।

इस राज्य में ३८० मील पक्की सड़क और लगभग ५०० मील कच्ची सड़क है। इसके सिवा अभी हाल में कई दूसरी पक्की सड़कें तयार हुई हैं। तटीय रेलवे लाइन मेग्री सेम्बिलान राज्य से पहँग राज्य में प्रवेश करती है और मेराषायु नामक स्थान पर राज्य के बाहर हो जाती है।

आने-जाने के साधनों की कमी के कारण पहँग



नेग्री सेम्बीलान
संकेत
रेल
सड़क
कृषि प्रदेश
रक्षित वन
अन्य वन
सेलंगोर
काजंग
पहांग
जोहोर
मलक्का
सेरम्बन
पोर्ट डिक्सन
स्वास्थ्य गृह



पाहांग
पेमाना
१०२
१०३
के
ल
न्ता
न
लि
पी
म
का
न्ता
न
से
लं
गो
ने
ग्री
से
म्बी
ला
न
म
ल
क्का
जो
हो
र
पोर्ट डिक्सन
क्वाला लुम्पुर
क्वाला लिपीस
बेन्टोंग
पहांग
पेकान
तेमेर्लोह
क्वाला क्रौ
तम्पिन
मलक्का



अपनी खनिज सम्पत्ति को उन्नति नहीं दे सका। चावल टीन, सोना यहां की मुख्य उपज है।

टीन, रबड़, रैटन, मछली, कोपड़ा, लकड़ी और चमड़ा बाहर भेजा जाता है।

चावल, पत्थर के बर्तन, सूती कपड़े, तम्बाकू, सारोंग, घरेलू सामान, पिट्रोल तथा स्पिरिट आदि सामान बाहर से आता है।

क्वाला लिपिस राज्य की राजधानी है। पेकान में सुल्तान के रहने का स्थान है। पहंग के समीप (सुगी-लेम्बिग) की टीन की बड़ी बड़ी खानें हैं। रऊब, बेराटोंग, तेमेर लोह तेम्बिलिंग आदि मुख्य नगर हैं।



असंयुक्त मलय राज्य

संयुक्त राज्य वह राज्य है जिनका शासन संयुक्त रूप से होता है और उनकी एक कौंसिल होती है। जिसमें सभी राज्यों के प्रतिनिधि होते हैं। असंयुक्त वह राज्य है जो संगठित नहीं हैं वरन् उनका अलग अलग प्रबंध होता है परन्तु सभी ब्रिटिश संरक्षता के अंतर्गत हैं। जोहोर; केदाह, पेर्लिस, कलांतन और ट्रेंगान के राज्य असंयुक्त राज्य हैं। जोहोर को राजधानी जोहोर भारू, केदाह की अलोर स्टार, पेर्लिस की कांगर, केलांतन की कोटा-भारू और ट्रेंगान की राजधानी क्वाला ट्रेंगान है।

जोहोर का क्षेत्रफल ७६७८ वर्गमील और जनसंख्या लगभग तीन लाख है। इस राज्य की मुख्य रेलवे लाइन एफ० एम० एस० है। रबड़, टीन, कोप्रा, सुपारी, गैम्बोर, लकड़ी और बन से प्राप्त वस्तुएँ बाहर भेजी जाती हैं। चंडू, चावल, तेल, तम्बाकू, स्पिरिट और कलें बाहर से मँगाई जाती हैं।

इस राज्य का शासक सुल्तान कहलाता है। बातू पहत मुअर बन्दरगाहों पर छोटे जहाज आकर ठहरते हैं।



केदाह

१९०९ ई० में स्याम के राजा ने केदाह और पेर्लिस राज्यों को ब्रिटिश सरकार के हाथों में सौंप दिया। केदाह का क्षेत्रफल ३६४८ वर्गमील और जनसंख्या लगभग ३ लाख ५० हज़ार है। इस राज्य का शासक हिज हाईनेस सर अब्दुल हमीद हलीमशाह है।

उत्तरी केदाह में पाँच और दक्षिण में चार जिले हैं। इस राज्य की मुख्य रेलवे लाइन एफ० एम० एस० रेलवे है। राज्य में पक्की तथा कच्ची सड़कें भी हैं।

कवाला मूदा, कुलिन और बन्दर भारू जिलों में रबड़ तथा नारियल की उपज होती है। इस राज्य में मुख्य नाज धान है। राज्य में खेतों की सिंचाई के लिये नहरें भी हैं। टीन, रबड़, साबूदाना और कोपरा बाहर भेजे जाते हैं। मिट्टी का तेल, चीनी, सूती कपड़े, तम्बाकू और पशु बाहर से मँगाये जाते हैं।

इस राज्य के मुख्य नगर अलोर स्टार, सुंगी पेटानी, कुलीम, लूनस और बन्दर भारू हैं।

पेर्लिस

१९०९ ई० को बंकाक की संधि के अनुसार यह

राज्य अँग्रेजों की संरक्षता में आया। यहां का शासक सय्यद अल्वी बिन अल्मरहूम सय्यद शफी हैं। इस राज्य का क्षेत्रफल ३१६ वर्गमील और जनसख्या लगभग ४५ हज़ार है। यहां की मुख्य रेलवे लाइन फेडरेटेड मलय स्टेट्स लाइन है और पक्की तथा कच्ची सड़कें भी हैं। यहाँ की मुख्य उपज चावल, मछली, टीन और अंडा है। तम्बाकू, स्पिरिट और मिट्टी का तेल बाहर से मँगाया जाता है।

केलांतन

१९०९ ई० में यह राज्य स्याम सरकार द्वारा ब्रिटिश सरकार को दे दिया गया। राज्य का वर्तमान शासक सुल्तान सर इस्माइल इब्न अल्मरहूम सुल्तान मुहम्मद चतुर्थ हैं। इस राज्य की राजधानी कोताभारू है।

इस राज्य का क्षेत्रफल ५७१३ बर्ग मील और जन संख्या तीन लाख १५ हज़ार है। इस राज्य में ६८ मील पक्की सड़क है। यहां की मुख्य रेलवे पूर्वी तट रेलवे लाइन है। मुख्य उपज चावल, रबड़, सुपारी और नारियल है। रबड़, कोप्रा और सुपाड़ी बाहर भेजे जाते हैं। तम्बाकू, अफीम, सूती कपड़े, मिट्टी का तेल, चावल, चीनी और दूध बाहर से मँगाया जाता है।



ट्रेङ्गान

१६१६ ई० में ट्रेङ्गान राज्य में ब्रिटिश सलाहकार नियुक्त किया गया। इस राज्य का वर्तमान शासक हिज़ हाईनेस तंगकू सुलेमान बद्रुल-अलम शाह बिन ज़्या-उद्दीन हैं।

इस राज्य का क्षेत्रफल ५,५३० वर्गमील और जन-संख्या १,५५,००० है। इस राज्य में क्वाला ट्रेंगान, बसूत, मरंग, दुंगन, पक, केमामन, केमसेन और क्वाला बेरंग ज़िले हैं। इस राज्य में कई छोटे छोटे द्वीप भी शामिल हैं।

इस राज्य की मुख्य उपज रबड़, नारियल और मछली है। इस राज्य में खनिज सम्पत्ति बहुत है। टीन की खानों की उन्नति आने जाने के साधनों की कमी के कारण नहीं हो रही है। लगभग प्रत्येक घर में सूत काता तथा कपड़ा बुना जाता है। क्षेत्र में १७ हज़ार एकड़ भूमि में नारियल तथा रबड़ की खेती होती है। इस राज्य में रेलवे लाइनें या पक्की सड़कें नहीं हैं।

रेशम, सूती सारोंग, सूखी मछलियां, टीन, रबड़, कोपरा और सपुड़ी बाहर भेजे जाते हैं। ट्रेंगान का सारोंग बहुत प्रसिद्ध है।

रेशम, सूती कपड़े, तम्बाकू, चीनी और पिट्रौल बाहर से आते हैं।

क्वाला मरंग, क्वाला पक, क्वाला डंगन मुख्य नगर हैं। चुकाम नगर इस राज्य का दूसरा बड़ा नगर है।

मलय प्रायद्वीप की एक नदी

यदि पेराक की नदियों में नाव द्वारा यात्रा की जावे तो (ज्वार उतर जाने के बाद) पता चलता है कि नदी के दोनों किनारों पर कीचड़ पड़ी रहती है जिसके ऊपर नदी के किनारे उगने वाले वृक्षों के बन होते हैं। यदि ज्वार चढ़ा रहता है तो यही बन नदी के ऊपर उगे हुये दिखाई पड़ते हैं।

उस समय वहाँ का दृश्य बड़ा शान्तिमय होता है। कहीं किसी प्रकार का कोई शब्द सुनाई नहीं पड़ता है। केवल डांड़ चलाने के कारण पानी से छप-छप आवाज़ पैदा होती है। नदी के किनारे किसी प्रकार के जीव अथवा मनुष्य नहीं दिखाई पड़ते हैं। उसी शान्तिमय संसार में एकाएक वृक्षों के बीच से रामचिरैया निकलती है और किसी मछली पर टूट पड़ती है। उसके बाद फिर

वहाँ शान्ति का राज्य स्थापित हो जाता है। कुछ दूर चलने पर हम देखते हैं कि फिर कुछ शब्द हुआ। तट की ओर ध्यानपूर्वक देखने से शीघ्र ही पता चल जाता है कि वृक्षों की जड़ों के पास से कोई घड़ियाल नदी में उतर रहा है।

जहाँ ज्वार का पानी नहीं पहुँचता वहाँ तटों पर नारियल तथा और दूसरे फलों के वृक्ष उगते हैं। फलदार वृक्षों तथा नारियल के पेड़ों के बीच में मलय लोगों के छोटे गाँव दिखाई पड़ते हैं। गाँवों को मलय लोग कम्पोंग कहते हैं। गाँवों के घर बांस और दूसरे प्रकार की लकड़ियों के बनाये जाते हैं। गाँव के घर लट्ठों के ऊपर बनते हैं जिससे बाढ़ का पानी या जंगली पशु वहां तक न पहुँच सकें। झोपड़ों की छतें अत्ताह (नारियल के पत्तों की सजावट) की बनी होती हैं। पेराक में सड़कें नहीं हैं। नदियों द्वारा ही यात्रा होती है। जंगलों के बीच बीच खाली भूमि में खेती होती है। इस खाली भूमि की मिट्टी कछारी होती है और उस भूमि में धान की अच्छी उपज होती है।

नाव को मलय भाषा में सम्पन कहते हैं। सम्पन

कहीं कहीं लदे हुये दिखाई पड़ते हैं। इनमें चावल, मछली या मारने वाले रहते हैं।

जैसे जैसे हम नदी के चढ़ाव की ओर चढ़ते जाते हैं वैसे वैसे नदी की धारा तीव्र होती जाती है। बीच बीच में गाँव आते जाते हैं। गांवों के समीप घुटने भर पानी में भैंसे खड़े दिखाई पड़ते हैं। गाँव के बच्चे तट पर खड़े होकर नदी में जाने वाली नाव को बड़े ध्यान से देखा करते हैं।

पेराक की आबादी बहुत कम है। इसी कारण नदियों के तट पर भी गाँव बहुत कम हैं।

जंकसीलोन की टीन की खान

जंकसीलोन का समस्त द्वीप एक बड़ी टीन की खान है। वहां की पहाड़ी तथा घाटी टीन से भरी है। बनों में और समुद्र के नीचे सब कहीं टीन ही टीन है। बहादुर चीनियों ने वहां टीन की खानों में काम किया और उन्होंने घाटियों की भूमि को उलट डाला, पहाड़ियां तोड़ डालीं, समुद्र के नीचे बांधियां बना डाली। बन्दरगाहों का अस्तित्व जाता रहा।



पहाड़ियों के बीच टीन निकालने में बड़ा आनन्द आता है। पहाड़ियां बनों के मध्य स्थित हैं। खान खोदने का काम बिजली तथा भाप की कलों द्वारा होता है। करोड़ों रुपया व्यय करके सैकड़ों मील नहरें पहाड़ियों के बीच बनाई गई हैं। पानी के मार्ग अधिकतर घेरे के रूप में बनाये गये हैं; कहीं कहीं पर पहाड़ियों को काट कर बनाये गये हैं। इनमें सब से सुन्दर टार सुन का जलमार्ग है। यह २०० फुट लम्बा और ६५ फुट ऊँचा है। यह मजबूत लकड़ी का लम्बे बांसों के ऊपर बनाया गया है। इसके नीचे एक मेहराबदार मार्ग हाथियों के जाने के लिये बनाया गया है।

खानों को खोदने का अधिकतर काम वर्षा ऋतु में होता है परन्तु कुछ खानों को पानी तथा बिजली समस्त वर्ष प्राप्त होती रहती है। उन खानों के सिर तक पानी की धार लाई गई है और फिर वहां से पानी ले जाकर उस चट्टान पर गिराया जाता है जहां टीन मिट्टी में मिली पड़ी रहती है। चट्टान पर खड़े होकर काम करने वाले अपने लोहे की कुदालियों या फावड़ों से टीन मिले पदार्थ को पानी में मिलाते रहते हैं। पानी लकड़ी

के बड़े बड़े संदूकों या खाइयों के बीच होकर बहता है जिनकी गहराई १० फुट तक होती है। इन संदूकों के ऊपरी सिरे पर टीन जम जाती है जो कुछ अच्छी टीन ऊपरी सिरे पर नहीं जमती उसे ऊपरी भाग में किसी स्थान पर रोकने का प्रयत्न किया जाता है। लकड़ी के संदूकों के पानी को लोग घंघोलते रहते हैं जिससे टीन का बहुत थोड़ा भाग नीचे के सिरे पर बच कर जा सकता है। कुछ दिनों या सप्ताहों के बाद टीन पेलचे द्वारा खुरच कर बाहर निकाल लिया जाता है।

इन खानों के पानी की नालियाँ अपनी बची हुई मिट्टी को जहां बहाकर घाटी में फेंकती हैं वहां की भूमि चमकती हुई दिखाई पड़ती है। इस मिट्टी के कारण उस स्थान पर बनस्पति का संचार नहीं होता। प्रत्येक ऋतु के बाद यह मिट्टी आगे बढ़ती जाती है और बनस्पति को साफ करती जाती है।

मलय लोगों के घर

मलय लोगों के घर लकड़ी के बनाये जाते हैं। कुछ धनी मलय लोग अपनी दीवार लकड़ी के तख्तों की



और छतें खपड़ों की बनाते हैं परन्तु अधिकांश घर डालियों को बांध बांध कर बनाये जाते हैं। छतें नारियल के पत्तों से बनाई जाती हैं। कभी कभी तो दीवारें चट्टानों के ऊपर ही बनाई जाती हैं। मकानों में खिड़कियाँ भी बनाई जाती हैं जिन्हें बन्द करने के लिये झांप लगी रहती है। घर में एक और बन्द दालान रहता है। घर के फर्श की भांति बरामदा भी धरती से पांच फुट ऊँचा बनाया जाता है। उसके अन्दर जाने के लिये द्वार पर सीढ़ियाँ लगी रहती हैं। जिन घरों में बच्चे होते हैं उनमें द्वार मार्ग पर कटघरे बना दिये जाते हैं जिससे बच्चे नीचे न गिरें।

साधारण तौर पर घर के भीतरी भाग में अँधेरा होता है। अधिक ऊँचे घरों में खिड़कियाँ नहीं रहती हैं। छत के ऊपर एक छोटी अटारी होती है जहाँ पर अजनबी के आने पर अविवाहित लड़कियाँ जाकर सोती हैं। उस अटारी में एक खिड़की रहती है जिसके द्वारा अविवाहित लड़की घर के बाहर के दृश्य को भली प्रकार देख सकती है। सोने के लिये चटाइयाँ होती हैं और मच्छरों से बचने के लिये मसहरियाँ रहती हैं। घरों में माता-पिता के शयन के लिये एक ऊँचा स्थान बना रहता है।

मलय लोगों के घरों में मेज़ कुर्सियाँ नहीं रहती हैं। अब नगर निवासी रखने लग गये हैं। घर के पिछले भाग में एक और दूसरी दालान रहती है। इस दालान होकर एक बन्द मार्ग रसोई घर को जाता है। मलय घरों के पास-पड़ोस का स्थान बड़ा गंदा रहता है। मलय लोग अधिकांश समय तक अपने घरों से बाहर व्यतीत करते हैं इसलिये घर का कूड़ा फेंकने के लिये कोई किसी को मना नहीं करता है। कौवे की आवाज़ सुनकर वहाँ के निवासी घर की दूरी का पता लगाते हैं।

भोजन

मलय लोगों का मुख्य भोजन चावल है। चावल को वह मसालेदार तरकारी के साथ खाते हैं। मछली और चिड़ियों का मांस वहाँ अधिक प्रयोग किया जाता है। त्योहारों और उत्सव के समय भैंसे अथवा गाय के मांस का प्रयोग होता है। प्रत्येक कुटुम्ब के पास बकरियों का एक छोटा झुंड होता है। अधिकांश लोग गाय तथा भैंसे रखते हैं। भैंसों से हल जोतने तथा बन से लकड़ी लाने का काम लिया जाता है। मसाला, साग,

तरकारी, आलू, प्याज आदि वस्तुएँ घर के समीप ही लोग उत्पन्न करते हैं। घर के चारों ओर फल के बाग लगाये जाते हैं। उन्हें उनके भोजन के लिये उनके बागों में काफी फल पैदा हो जाते हैं। मलय लोगों को नमक, सूती कपड़ा और खेती के औज़ारों के लिये ही विदेशियों का मुँह देखना पड़ता है नहीं तो सभी आवश्यक वस्तुएँ वह अपने यहाँ पैदा कर लेते हैं। मलय लोग बड़ा सीधा-सादा जीवन व्यतीत करते हैं। उन्हें अधिक आराम की चिंता नहीं रहती है। मलय लोग जो चिड़ियां पालते हैं वह भोजन करते समय लोगों (खासकर विदेशियों) को बड़ी कष्टदायक सिद्ध होती हैं। वह भोजन की थालियों में आकर भोजन खाने लगती हैं।

शिकार

मलय प्रायद्वीप के वनों में शिकार के लिये बहुत से वनैले पशु हैं परन्तु वहाँ शिकार करना सरल कार्य नहीं है। शिकारी को वहाँ के निवासियों की भाषा जाननी बड़ो आवश्यक है क्योंकि उन्हीं लोगों की सहायता से शिकार किया जा सकता है। हाथी मलय प्रायद्वीप का

एक मुख्य जानवर है। हाथी का शिकार बहुधा लोग उसके दाँत के लिये करते हैं। हाथी का शिकार करना सरल कार्य नहीं है। बनों में हाथी का पता लगाना ही कठिन हो जाता है। उसके पाँवों के चिन्ह तथा मार्ग को देखकर उसका पीछा किया जाता है। वह बहुधा वृक्षों के सहारे खड़ा होकर सो जाता है। हाथी का शिकार करते समय शिकारी को ध्यान रखना पड़ता है कि उसकी गंध हाथी को न मिल सके। यदि हाथी को शिकारी का पता चल गया तो फिर उसका मारा जाना कठिन है।

शिकारी हाथी के मस्तक पर गोली मारते हैं। मस्तक का निशाना बड़ा सच्चा होता है। यदि मस्तक पर निशाना न किया जा सका तो फिर कान और कंधे के बगल में लगातार गोलियाँ मारनी पड़ती हैं। घायल हाथी का भी दो या तीन दिन तक पीछा करना पड़ता है। हाथी के दाँत बड़े मूल्यवान होते हैं।

मलय में साँड़ और भैंसे भी जंगलों में बहुत रहते हैं। सांड़ों और भैंसों के नर मादे की पहिचान में बड़ी कठिनाई पड़ती है। भैंसे झुंड के झुंड रहा करते हैं और बहुधा बड़े खतरनाक सिद्ध होते हैं।



मलय प्रायद्वीप में दो प्रकार के गैंडे पाये जाते हैं। एक वह हैं जो जावा में अधिक मिलते हैं उन्हें सोएडैकस कहते हैं। दूसरे प्रकार का गैंडा वह है जो सुमात्रा में अधिक मिलता है उसे सुमात्रेन्सिस कहते हैं।

जब तक गैंडे को शिकारी की गन्ध नहीं मिलती तब तक वह बड़ा मूढ़ रहता है परन्तु शिकारी की गंध पाते ही वह बन का एक बड़ा चतुर पशु बन जाता है। गैंडे के शिकार करने में शिकारी को ध्यान रखना चाहिये कि वह गैंडे के पता लगाने के पहले ही गैंडे का पता लगा ले। वह बैठा बहुधा भांति भांति के शब्द करता तथा सांस लेता रहता है। गैंडा भी चोट खाने के बाद भाग निकलता है और उसे ढूँढ़ने में एक सप्ताह तक लग जाता है।

टेपिर (एक प्रकार का सूंडदार पशु) भी मलय में में पाया जाता है परन्तु मध्यवर्ती भाग में बहुत है। यह बड़ा शर्मीला पशु होता है।

मलय में शेर, चीतों और तेंदुओं का शिकार भी लोग करते हैं परन्तु यह पशु अब कम पाये जाते हैं। यह अब केवल पहाड़ी बनों में ही मिलते हैं।

देश दर्शन

रबड़

रबड़ के पेड़ लगाने के पहले ज़मीन साफ की जाती है। छोटी झाड़ियां और बड़े पेड़ सभी काट डाले जाते हैं। पेड़ों के काटने का काम पीले रंग वाले चीनी लोग करते हैं। पीले रंग वाले चीनी लोग मलय प्रायद्वीप में बहुत बस गये हैं। कटे हुये पेड़ और पौदे दो तीन हफ्ते तक पड़े सूखते रहते हैं। उसके बाद उनमें आग लगा दी जाती है। जब आग बुझ जाती है और ज़मीन ठंडी पड़ जाती है तब सड़कें बनाई जाती हैं। साफ ज़मीन पर पाँच पाँच गज़ की दूरी पर रबड़ के नये पौधे लगाये जाते हैं। पौधों को लगाने का काम हिन्दुस्तानी करते हैं। यह लोग फावड़े मे धरती खुरच कर बराबर करते हैं।

धूप निकलने के कुछ ही समय बाद पेड़ गरम हो जाते हैं। गरम होने से उनसे रस कम निकलता है। इसलिये रबड़ के बगीचों में प्रातःकाल ही काम आरम्भ हो जाता है। रात का पहरा देने वाला चार बजे प्रातः-काल घंटा बजाता है उस समय अँधेरा रहता है तो भी सभी लोग इकट्ठे हो जाते हैं। मज़दूर दिन में चावल



पका कर खाते हैं। सवेरे कोई कुछ नहीं खाता है साढ़े पाँच बजे प्रातःकाल कुली लोग एक लम्बी पंक्ति में खड़े हो जाते हैं। फिर उनकी हाजिरी होती है। जो लोग बीमार होते हैं या छुट्टी चाहते हैं उनके बगीचों का मैनेजर छुट्टी दे देता है। शेष लोगों को वह उस दिन का काम बतलाता है। औरतें और बच्चे निराई करने के लिये भेजे जाते हैं। मलय में जंगली पौधे बड़ी जल्दी बढ़ते हैं। बहुधा वह १० दिन में २० इंच बढ़ जाते हैं। इस लिये सारा बगीचा एक महीने में दो बार निराया जाता है। पच्चीस या तीस मज़दूर एक साथ निराई के काम में लगाये जाते हैं। मज़दूरों के ऊपर एक मेठ (सरदार) होता है। वह देखता रहता है कि प्रत्येक मज़दूर ठीक ठीक काम करता है।

साढ़े दस या ग्यारह बजे भोजन करने के लिये आध घंटे की छुट्टी होती है। वह सवेरे अपने साथ पका कर लाया हुआ भोजन खाते हैं। भोजन के बाद वह फिर काम में लग जाते हैं। औरतें तीन बजे तक काम करती हैं लेकिन बच्चों को एक बजे छुट्टी मिल जाती है। काम से लौट कर वह लकड़ी इकट्ठी करते हैं और

फिर शाम को स्कूल में पढ़ने के लिये जाते हैं। मर्द लोग सड़कों की मरम्मत करने, नये पौधे लगाने या रबड़ का रस इकट्ठा करने के लिये भेजे जाते हैं। रबड़ के बगीचों में कुली लोग रस निकालने के लिये रबड़ के पेड़ों की छाल छीलते हैं। पेड़ के घेरे का १/३ भाग छीला जाता है फिर कुछ नीचे की ओर छाल छील दी जाती है। नीचे वाले भाग में चीनी मिट्टी का प्याला रख दिया जाता है इसी प्याले में पेड़ का सफेद गाढ़ा रस धीरे धीरे टपकता रहता है। जब १० बजे कारखाने की सीटी होती है या डुग्गी बजती है तो इन प्यालों का रस बाल्टी में उंडेल बाल्टी भर जाने पर कुली लोग उन्हें अपने सिर पर रख कर या बांस में लटका कर कारखाने में ले जाते हैं। कभी कभी रस बड़े डेकचों में भर कर बैलगाड़ी में रक्खा जाता है और कारखाने में पहुंचाया जाता है। कारखाने में यह रस बड़े कड़ाहों में उँडेला जाता है। इससे कुछ घंटों में रस (दूध) जम कर ठोस हो जाता है। ठोस पदार्थ बेलन में दबा कर चादरें बनाते हैं। इन चादरों को धुएँ की आँच देकर सुखा लेते हैं। फिर इन रबड़ की चादरों को टायर और दूसरी चीजें बनाने के लिये योरुप, अमरीका और दूसरे देशों को भेज दिया जाता है।



बगीचों का जीवन बड़ा संकटमय होता है। अपार बन में रबड़ के ये बगीचे उसी तरह छोटे होते हैं जिस तरह बहुत बड़े खेत में एक छोटी क्यारी होती है। बन में जंगली जानवरों का राज्य होता है। कभी कभी चीता उछल कर रबड़ निकालने वाले कुली को मार डालता है। इससे कुछ समय तक काम बन्द हो जाता है। बगीचों का गोरा मालिक (जिसके पास बन्दूक होती है) चीते को गोली से मार देता है। कभी कभी लोग ढोल, तुरही और दूसरे बाजे बजा कर इतना शोर करते हैं कि चीता डर कर भाग जाता है। कुछ मलायी मज़दूरों का विश्वास है कि चीता उस आदमी पर कभी हमला नहीं करता है जो उसकी तरफ देखता रहता है। इससे वे अपने सिर के पीछे की तरफ कपड़े की आंख वाला बुरका डाले रहते हैं। अगर कोई चीता पीछे की तरफ से आता है तो वह समझता है कि आदमी मेरी ओर देखता है इसलिये शायद वह उस पर हमला नहीं करता है।

रबड़ इकट्ठा करने वाले कुलियों को ११ बजे छुट्टी मिल जाती है इसके बाद घर लौट कर वे भोजन (दाल-भात) खाते हैं। कुछ लोग खाना खाकर थोड़ी देर सोते

हैं। फिर वे अपने घर के बगीचों में काम करते हैं। इधर मलेरिया ज्वर बहुत होता है। उससे बचने के लिये सब को कड़वी कुनैन खानी पड़ती है।

रबड़ के बगीचों में काम करने वाले कुली बड़े लम्बे घरों में रहते हैं। ये घर लकड़ी के बने होते हैं। वे पत्तों से छाये जाते हैं। कहीं कहीं वे टीन से छाये जाते हैं। हरएक घर में २४ कोठरियाँ होती हैं। हरएक कोठरी में एक दरवाज़ा और एक खिड़की रहती है। एक कोठरी और दूसरी कोठरी की बीच की दीवार बहुत ऊँची नहीं होती है। प्रत्येक कोठरी में चार कुली रहते हैं। कुली बहुत रहते हैं। इससे कई लम्बे घर एक लाइन में बनाये जाते हैं। ये घर दो तीन गज़ ऊँचे लट्ठों पर बनाये जाते हैं। इससे वे नमी से बचे रहते हैं। नीचे वाले भाग में रसोई होती है। पानी बरसते समय छोटे बच्चे भी यहाँ खेलते हैं। कुछ दूर एक तरफ गोरे मैनेजर का बंगला होता है और भीतर खूब सजा रहता है।